Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-32
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 24 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 2018 तक
आश्विन शुक्ल पूर्णिमा से कार्तिक कृष्ण षष्ठी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

धर्म का तीसरा... पृष्ठ- 2
जल चिकित्सा या..... पृष्ठ- 4
जीवन जीने की कला... पृष्ठ- 5
लौह पुरुष सरदार... पृष्ठ- 8
हम तुम्हें चाहते.. पृष्ठ- 12

- अहिंसा के राज्य में हिंसा की सियासत
- राजनीति के चक्रव्यूह में राम
- ....और लोकतन्त्र पिटता रहा
- श्रीराम जन्मभूमि वास्तविक तथ्य
- विश्व शांति का केवल एक ही मार्ग वैदिक धर्म
- श्रेष्ठ अभियान्त्रिकी विज्ञान का निदर्शन है श्रीराम सेतु

एएमयू बनी आतंक का विश्वविद्यालय

हिन्दू महासभा ने देशद्रोहियों व आतंकवादियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की

• संवाददाता •

गत दिनों जम्मू कश्मीर में आतंकवादी मलान बानी के मारे जाने के बाद उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में जिस तरह का विवाद सामने आ रहा है उससे यह स्पष्ट हो गया है कि यह विश्वविद्यालय पूरी तरह से आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त है। इसके पहले भी बटंवारे के खलनायक मुहम्मद अली जिन्ना के चित्र लगाने के विवाद ने भी इस बात की पुष्टि की थी, लेकिन सरकार के लचर रवैये के चलते यह शेष पृष्ठ 11 पर

राम मंदिर पर कांग्रेस का चुनावी आडंबर

श्रीराम जन्म स्थान पर शीघ्र बने भव्य श्रीराम मंदिर–हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम मंदिर के निर्माण पर कांग्रेस ने एक बार फिर जहर उगला और पार्टी के वरिष्ठ नेता शशी थरुर ने कहा कि अच्छे हिन्दू नहीं चाहते कि जन्म भूमि पर राम मंदिर का निर्माण हो क्योंकि वह मंदिर बावरी मस्जिद गिराकर बनने वाली है। थरुर के इस बयान कि अखिल भारत हिन्दू महासभा घोर निन्दा करती है। हालांकि अपने बयान का बचाव करते हुए थरूर ने बाद में कहा कि राजनैतिक आकांओं की सेवा में लगी कुछ मीडिया द्वारा मेरे शब्दों को गलत तरह से प्रस्तुत किया गया, वैसे भी अपनी पार्टी का प्रवक्ता नहीं हूँ इसलिए बयान को पार्टी से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। वहीं भाजपा नेता और राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट में लड़ाई लड़ रहे सुब्रह्मण्यम स्वामी ने कहा कि शशी थरुर का यह बयान कांग्रेस को भारी नुकसान पहुंचायेगा। राम मंदिर और हिन्दुत्व के बारे में थरुर की कोई जानकारी बढ़ाए। केन्द्रीय मंत्री प्रकाश जावेडकर का कहना है कि यह थरुर और राहुल गांधी का व्यक्तिगत नजरिया हो सकता है, समाप्त हिन्दुओं का नहीं, इसलिए जाहिर है कि वे सच्चाई से दूर है और चुनाव के दौरान हिन्दू होने का मुखौटा इस्तेमाल कर लेते हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने श्रीराम जन्म स्थान पर भव्य श्रीराम मंदिर बनाने की मांग की है।

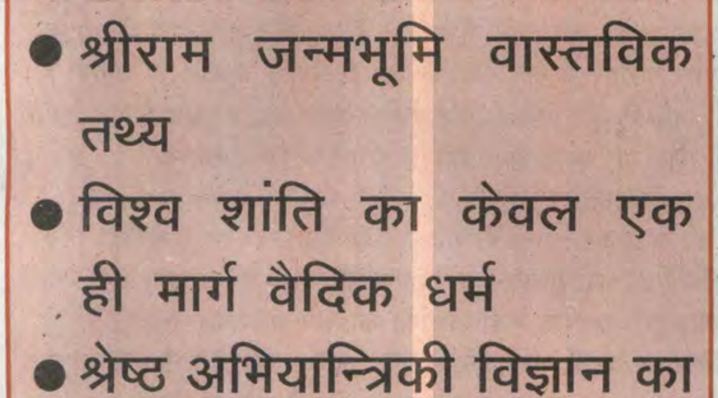

धर्म का तीसरा लक्षण-दम

✍ डॉ० प्रियंवदा वेदभारती

धर्म का तीसरा लक्षण है दम। **''दमो नाम मनसो वृत्तिनिग्रह''** मन की वृत्तियों के निग्रह करने को दम कहते हैं। यह जान लेने पर कि मन की वृत्तियों का निग्रह ही दम है यह जानना भी जरूरी है कि मन किसे कहते हैं, वह कितने प्रकार का है और उसकी वृत्तियाँ कौन–कौन–सी हैं। भाइयों एवं बहिनो! आठ चक्र नौ द्वारों वाली देवपुरी का शासन कार्य चलाने के लिए इसके अधिष्ठाता जीवात्मा को परमात्मा ने अनेक अद्वितीय उपकरण दिये हैं। इन्हीं उपकरणों में एक अद्वितीय उपकरण है मन। बुद्धि और चित्त के साथ मन मस्तिष्क में निवास करता है। मन सारे शरीर की क्रियाओं का संचालक व नियन्त्रक है। मन के मुख्य तीन भाग हैं–

देव मन, यक्ष मन, धृति मन।

मन के इन तीनों भागों की चर्चा यजुर्वेद के प्रसिद्ध शयनकालीन, शिवसंकल्प मन्त्रों में इस प्रकार आई है–

(१) **यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवम्........**

(२) **यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानाम्.....**

(३) **धृतिश्च यज्जयोतिरन्तरमृतं प्रजासू........।।**

देव मन ज्ञानेन्द्रियों का अधिष्ठाता है। ज्ञानेन्द्रियों से बाहरी विषयों का जितना भी बोध होता है वह देव मन के द्वारा ही होता है। इसी प्रकार यक्ष मन कर्मेन्द्रियों का स्वामी है। जो भी कर्म हम कर्मेन्द्रियों के द्वारा करते हैं वह यक्ष मन के द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। धृति मन शरीर की सारी स्वचालित क्रियाओं का स्वामी है। आन्तरिक अवयवों की क्रियायें जो स्वतः ही होती रहती है वे धृति मन के नियन्त्रण में ही होती हैं यह आत्मा का बड़ा ही विश्वास पात्र और आज्ञाकारी सेवक है। सोते समय प्रातः चार बजे उठाने का आदेश इसी धृति मन को आत्मा देता है और वह उसे अवश्य पूरा करता है। धृति मन अनेकानेक समस्यायें सुलझाने में भी बुद्धि का सहयोग करता है। उदाहरणार्थ–दिन भर की माथापच्ची के बाद भी जब हम किसी समस्या का हल नहीं निकाल पाते प्रायः देखा जाता है प्रातः उठते ही उस समस्या का समाधान स्वतः ही हो जाता है यह धृति मन का ही चमत्कार है। इस प्रकार अन्तःकरण चतुष्टय का एक प्रबल भाग मन शरीर की सभी क्रियाओं का संचालक व नियन्त्रक है। ऐसे शक्तिशाली मन को शिवसंकल्प वाला बनाना ही दम है। शिवसंकल्प वाले मन का सान्निध्य पाकर ही आत्मा परमात्मा के चिन्तन में लीन हो सकता है। तभी तो यजुर्वेद के मन्त्रों में मन की अद्भुत शक्ति का आभास कराते हुए छह बार प्रार्थना की गई। **'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' हे प्रभो!** मेरा मन शिवसंकल्प करने वाला हो। योगियों द्वारा भी कहा गया–''जितं जगत् केन? मनो हि येन'' संसार को किसने जीता? जिसने मन को जीत लिया। इसी मन के जीतने पर इस इन्द्रियों का भी नियन्त्रण रूपी लक्षण को दम का ही प्रपंच या विस्तार समझना चाहिये। ओमं शम्।

आप्त वचन

दमस्तेजो वर्धयति, पवित्रं दम उच्ते।
विपाप्मा निर्भयों दान्तः, पुरुषों विन्दते महत्।।

अर्थ : दम तेज को बढ़ाता है (अतः) दम को पवित्र कहा गया है। दम का अभ्यासी मनुष्य निष्पाप तथा निर्भीक होकर महान् फल को प्राप्त करता है।

सुखं दान्तः प्रस्वपिति, सुखं च प्रतिबुध्यते।
सुखं लोके विपर्येति, मनश्चास्य प्रसीदति।।

अर्थ : दम का अभ्यासी सुखपूर्वक सोता है और सुखपूर्वक जागता है। वह सुख से संसार में व्यवहार करता है और इसका मन प्रसन्न रहता है।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों की आर्थिक स्थिति पहले के मुकाबले मजबूत रहेगी। घरेलू तनाव कम होगे। नौकरी पेशा लोगों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा। विद्यार्थी वर्ग कुछ तनाव में होगा। आय व व्यय में समानता की स्थिति रहेगी।

वृष : इस वक्त कुछ लोग सरकारी तंत्र से सावधानी बरतें। परिवारिक सुखों के लिए यह समय श्रेष्ठ साबित होगा। प्राईवेट जॉब वालों के लिए इस समय सावधान रहने की आवश्यकता है। पाइल्स रोगी अपने स्वास्थ्य पर विशेष सावधानी बरतें अन्यथा कष्ट उठाना पड़ सकता है।

मिथुन : किसी मित्र के सहयोग से नई योजनायें बनेगी। जिनमें सफलता प्राप्त होगी। दूसरे स्थान में राहु रहने के कारण आपकी कटु वाणी से प्रियजन खिन्न हो सकते है। कुछ लोगों को नींद से सम्बंधित समस्या उत्पन्न हो सकती है। आर्थिक स्थिति पहले के मुकाबले मजबूत रहेगी।

कर्क : इस सप्ताह कुछ लोगों को घर–मकान व वाहन आदि के योग बन रहे है। स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी रखें। परिवार में मांगलिक कार्य होगें। किसी नये कार्य को करने से पहले अपने जीवन साथी से विचार विमर्श अवश्य कर लें तभी आपको सफलता प्राप्त होगी।

सिंह : यह सप्ताह विद्यार्थी वर्ग के लिए काफी शानदार रहेगा। सन्तान की प्रगति में अड़चने समाप्त होगी, परन्तु आपको क्रोध बहुत आयेगा और चिडचिड़ापन भी पैदा हो सकता है। नौकरी पेशा वालों लोगों को अपनो का विरोध झेलना पड़ सकता है।

कन्या : इस सप्ताह नवजवानों को मादक पदार्थो की आदत हावी हो सकती है; अतः सावधानी रखें। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। किसी खोई हुई वस्तु की प्राप्ति होगी। मित्रों व रिश्तेदारों से सम्बन्धों में मधुरता रखें। नयी कार्य योजनाओं को शीघ्र ही प्रारम्भ करें।

तुला : आप–अपनी योग्यता के अनुसार ही कार्य करें तो हितकर रहेगा। जो लोग रिस्की कार्य करते हैं उनको सावधानी रखने की आवश्यकता है। बहुत से लोगों को माता–पिता बनने के अवसर प्राप्त होगें। आमदनी में वृद्धि होगी। परन्तु विवादों से बचें।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोग वाहन चलाते वक्त सावधानी बरतें अन्यथा माथे या सिर पर चोट लग सकती है। जो लोग कर्ज या ब्याज आदि में फंसे है, उन्हें कुछ राहत मिलेगी। पैर पीड़ा या वात पीड़ा से ग्रसित लोगों के लिए यह समय अधिक कष्टकारी होगा।

धनु : आपको किसी भी नये कार्यो में रूकावट पैदा हो सकती है।अतः आप इस समय नये कार्य को शुरू न करें। मित्र या रिश्तेदार के कारण आपको हानि हो सकती है। आर्थिक उन्नति हेतु किये कये कार्यो में सफलता मिलेगी। इस मास परिवार में वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

मकर : इस सप्ताह रोज–मर्रा की जरूरतें पूरी होने से मन शान्त होगा। धन की आकस्मिक प्राप्ति हो सकती है। परिवारिक सुखों के लिए यह समय श्रेष्ठ साबित होगा। अपनी उपयोगिता को बनायें रखें तभी आप अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

कुम्भ : जो लोग कर्ज ब्याज आदि का कार्य करते उन्हें भी सावधान रहने की जरूरत हैं अन्यथा दोहरी समस्याऐ खड़ी हो सकती है। विरोधियों को परास्त करने का यह उचित समय है। अस्थमा रोगी अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें अन्यथा छोटी समस्या बड़ी समस्या का रूप धारणकर सकती है।

मीन : इस सप्ताह कुछ लोग जोखिम भरे कार्यो को करने से बचें। लेकिन जो लोग नौकरी कर रहे हैं उन्हें अपने सीनियर्स से परेशानी होगी। धन का अपव्यय होगा। व्यापारी वर्ग को विशेष सावधानी बरतने आवश्यकता रहेगी।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मदक्तिं लभते पराम्।।

फिर वह सच्चिदानन्दन ब्रह्म में एकीभाव से स्थित, प्रसन्न मन वाला योगी न तो किसी के लिये शोक करता है और न किसी की आकांक्षा ही करता है। ऐसा समस्त प्राणियों में समभाववाला योगी मेरी पराभक्ति को प्राप्त हो जाता है।।५४।।

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्रास्मि तत्त्वतः।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्।।

उस पराभक्ति के द्वारा वह मुझ परमात्मा को, मैं जो हूँ और ज़ितना हूँ, ठीक वैसा –का–वैसा तत्त्व से जान लेता है; तथा उस भक्ति से मुझ को तत्त्व से जानकर तत्काल ही मुझ में प्रविष्ट हो जाता है।।५५।।

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्रवतं पदमव्ययम्।।

मेरे परायण हुआ कर्मयोगी तो सम्पूर्ण कर्मों को सदा करता हुआ भी मेरी कृपा से सनातन अविनाशी परमपद को प्राप्त हो जाता है।।५६।।

हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 24 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 2018 तक

अध्यक्षीय

राजनीति के चक्रव्यूह में राम

अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जन्मस्थान पर एक भव्य मंदिर के निर्माण को लेकर चल रहा संघर्ष यथावत जारी है। पिछले २२ से अधिक वर्ष से भगवान राम के नाम पर राजनीति कर रही भारतीय जनता पार्टी की नीयत भी अब सवालों के घेरे में है। कारण स्पष्ट है कि पहले भाजपा कहती रही है कि जब केन्द्र और राज्य में भाजपा की सरकारें होंगी तब राम मंदिर निर्माण का सपना साकार हो जाएगा, किन्तु केन्द्र सरकार का पांच वर्ष बीतने को है और राज्य में भी भाजपा सरकार एक वर्ष बिता चुकी है लेकिन भगवान राम को अब भी अपना भवन नहीं मिल सका है। ऐसे में भाजपा की नीयत पर सवाल उठना स्वाभाविक है। कई मामलों में तो सरकार अध्यादेश लाकर त्वरित कार्य करने का प्रदर्शन तो कर रही है लेकिन राम मंदिर निर्माण के मामले में हर बार की तरह इस बार भी न्यायालय में भरोसा जताने का नाटक करने लगती है। इसलिए यह स्पष्ट सा लगता है कि राम मंदिर का मुद्दा भाजपा सिर्फ चुनाव में इस्तेमाल करना चाहती हैं। भाजपा की नीयत पर तो अब संघ जुड़े साधु संत भी सवाल उठा रहे हैं। गत दिनों दिल्ली में विश्व हिन्दू परिषद् की संत उच्चाधिकार समिति की बैठक में संतों ने कहा कि उच्चत न्यायालय के फैसले का अनिश्चित कालीन इंतजार नहीं किया जा सकता, इसस भाजपा सरकार संसद में कानून बनाकर राम मंदिर बनाने का मार्ग प्रशस्त करें। इसके साथ ही सभी प्रदेशों में धार्मिक संस्थाएं अपने-अपने राज्यपालों से मिलकर जन भावनाओं से अवगत कराएँ तथा इस मुद्दे पर राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से भी मिला जाए। संतों का कहना था कि भाजपा राम मंदिर पर गंभीर नही है वह इसका फायदा सिर्फ चुनाव में लेना चाहती है। सरकार तीन तलाक पर तो अध्यादेश ला सकती है, लेकिन राम मंदिर पर नहीं। संतों का कहना था कि केन्द्र और २२ राज्यों में भाजपा की सरकार होने के बावजूद हमें याचना करनी पड़ रही है, यह बहुत दुःख का विषय है। राज्य सभा में अल्प मत का बहाना भी अब नहीं चलेगा और संसद का संयुक्त सत्र बुलाकर कानून पारित कराना चाहिए। कानून बनाने के लिए सरकार को निर्धारित तिथि दी जाएगी। फिर आंदोलन शुरू कर दिया जायेगा। उक्त सारे बयान इंगित करते हैं कि संतों के धैर्य के बांध अब दूर रहें हैं। लेकिन इसी बीच राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत का कहना है कि राम मंदिर निर्माण के लिए संघ और भाजपा प्रतिबद्ध है, लेकिन कुछ कार्यो को करने में समय लगता हैं। सरकार की अपनी सीमाएं होती है और उसे अनुशासन में रहकर ही कार्य करना पड़ता है! भागवत ने कहा कि साधु और संत ऐसी सीमाओं से परे होते है। उन्हें धर्म, देश और समाज के उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। विपक्षी पार्टियां भी अयोध्या में राम मंदिर का खुलकर विरोध नहीं कर सकतीं क्योंकि उन्हें मालूम है कि भगवान राम बहुसंख्यक भारतीयों के इष्ट देव है। उधर राम मंदिर निर्माण को लेकर आठ दिन तक अनशन पर बैठे अयोध्या के तपस्वी छावनी मंदिर के मुख्य पुजारी परमहंस दास की गिरफ्तारी ने संतों के जले पर नमक छिड़कने का काम किया। चुनावी वर्ष में इस बार राम मंदिर निर्माण का मुद्दा भाजपा के लिए गले की फांस बनता जा रहा है। साधु-संतों के आर्शीवाद के बिना भाजपा चुनावी वैतरणी कैसे पार करेगी, यह तो समय बताएगा। लेकिन इतना तो निश्चित है कि साधु-संतों की मंदिर को लेकर आक्रमकता कुछ नये इतिहास का सृजन करने जा रही है। कुल मिलाकर यह कहां जा सकता है कि धारा ३७० और राम मंदिर निर्माण पर भारतीय जनता पार्टी की सरकार का निष्क्रिय रहना उसके लिए काफी-नुकसान दायक साबित हो सकता है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

अहिंसा के राज्य में हिंसा की सियासत

सांबर कांठा जिले के हिम्मत नगर में एक बच्चीी से बलात्कार के बाद गुजरात में उत्तर भारतीयों के साथ जो कुछ भी हुआ वह गांधी वादी राज्य में अहिंसा को खुली चुनौती है। कई हिंसक वारदातों के साथ गैर गुजरातियों को धमकी देकर उनको भगाया जाने लगा। इस तरह की मानसिकता देश को तोडने का काम करती है। अगर आज गैर गुजरातियों द्वारा गैर प्रान्तीय लोगों को अलग माना जा रहा है तो आजादी के बाद मुसलमाानों के साथ ऐसा होने से क्यो रोका यदि उस गांधी ने अपना मुस्लिम प्रेम न दिखाया होता तो आज देश कई समस्याओं से जूझ नहीं रहा होता। उस गांधी के गलत फैसलों के कारण देश की जो गति हो रही है वह किसी से छिपी नहीं है लेकिन आज गांधी की कांग्रेस जो गल्ती कर रही है वह खामियाजा एक बार फिर पूरे देश को भुगतना पड़ सकता है। यह देश भारतीयों का है और जातिवाद व क्षेत्रवाद इसकी छुरी है। लेकिन कांग्रेसी युवराज राहुल गांधी के निर्देश पर वोट की राजनीति को सुदृढ़ करने के लिए अल्पेश ठाकोर द्वारा जिस हथकंडे का प्रयोग किया जा रहा है वह समाज के बड़े वर्ग को आवास में देश को विकसित करने में उत्तर भारतीयों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता लेकिन आये दिन कई प्रांतो में इनके साथ ही दुर्व्यवहार किया जाता रहा है। ऐसा क्यूं है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। फिलहाल गुजरात में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है और वहां की सरकार देर से जागी और सांप के जाने के बाद लकीर पीटने का काम कर रही है। सच पूंछिये तो गुजरात से उत्तर भारतीयों का पलायन राजनीति की गंदी प्रवृति का नतीजा है। गुजरात से हो रहे पलायन ठीक उसी प्रकार हो रहे है जैसे कुछ दिन पूर्व २०१२ में असम में वोडो और मुस्लिम समुदाय के लोगों बींच हिंसक टकराव के बाद दक्षिण भारत में इस तरह की अफवाह फैलाई गई कि असम के लोग फलां दिन तक असम छोड़ दें नहीं तो उन पर हमले किए जायेंगे। इसके बाद पूर्वोतर के लोग दहशत मे आ गए और असम से पलायन करने लगे। जब तक वहां की सरकारें कुछ कर पातीं, हजारों लोग आसाम छोड़ चुके थे। वर्तमान में यही स्थिति गुजरात की भी है, लेकिन यहां पर अफवाह नहीं बल्कि खुली धमकियां दी गई हैं। उत्तर प्रदेश-बिहार के मजदूरों को धमकाने के आरोप में सैकड़ो लोगों को गिरतार भी किया जा चुका है। बच्ची से बलात्कार के बाद गुजरात में उत्तर भारतीयों के खिलाफ एक सुनियोजित अभियान छेड़ा गया, जिसमें वहां की ठाकोर सेना का हाथ माना जा रहा है। यह सेना कांग्रेसी विधायक अल्पेरा ठाकोर के नेतृत्व में काम करती है। अब चारों तरफ से आरोप लगने के बाद वह कहतें है कि वह शांति के समर्थक हैं। जाति विशेष की राजनीति करने वाले अल्पेश की सेना के लोग ही धमकाने का कार्य कर रहें हैं इसलिए उनकी अनदेरबी सरकार को नहीं करनी चाहिए। वैसे इसकी उम्मीद कम है कि राज्य सरकार अल्पेश के खिलाफ कोई कार्यवाही करेगीं। दूसरी तरफ राहुल गांधी को अपने इस सिपहंसालार पर गर्व होगा, क्यों कि मोदी विरोध की राजनीति में अल्पेश राहुल गांधी के लिए एक काबिल मोहरा है। समस्या केवल यह नहीं है कि ऐसे नेताओं के पास समर्थकों की कमी है, बल्कि समस्या यह है कि कुछ पार्टियों द्वारा इनको संरक्षण मिल जाता है। इस घटना से सबसे अधिक खुशी कांग्रेस को होगी कि गुजरात तथा अन्य भाजपा शासित राज्यों में इस तरह की घटनाएं मोदी की बदनामी का कारण बनेगी और उन्हें कटघरे में खड़ा करने में आसानी होगी। एक-दूसरे को नीचा दिखाने के उत्साह में देश का कितना अहित हो रहा है, लोकतांत्रिक मर्यादाएं किस हद तक खत्म हो रहीं है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत के राजनीतिक दल अपने स्वार्थो को पूरा करने के लिए किसी भी सीमा तक गिर सकते हैं। इसलिए निजी और दलीय हित के लिए देश हित को बलिदान किया जा रहा है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

जल चिकित्सा या जलोपचार

✍ डॉ. हेनरी लिंडलार

ठंडे जल के प्रयोग के अच्छे प्रभाव–रक्तपरिभ्रमण को उत्तेजित करना : त्वचा से ठंडे जल का संपर्क सारे शरीर में रक्त प्रवाह को प्रोत्साहित करता है। ठंडे जल के प्रयोग के पहले और बाद में की गई लाल रक्त कणों की गणना में बढ़ोत्तरी पाई गई है। इसका यह अर्थ तो नहीं हो सकता कि ठंडे जल के प्रयोग से क्षण मात्र में ही लाल रक्त कण बढ़ गए हों। हाँ, यह संभव है कि तंतुओं में रुके हुए, रक्त में सुप्त पड़े हुए लाल रक्त कण, जो इकट्ठे होकर थक्का सा बना रहे थे, उत्तेजित होकर गतिमान हो गए हों। निश्चित ही ठंडे जल के फव्वारे, प्रक्षालन, सिट्ज बाथ, नंगे पाँव ओस या गीले पत्थरों पर चलना या अन्य प्रयोगों का शरीर पर शक्तिदायक और उत्तेजक प्रभाव उसके विद्युतचुंबकीय गुणों के कारण होता है।

अशुद्धियों का निष्कासन : ठंडा जल, शरीर के रक्त प्रवाह को अधिक वेग से गतिमान करता है, इससे ऊतकों की कोशिकाओं में रक्त तेजी से जाता है और उनमें एकत्र हुए रोगजनक पदार्थों को साफ करता है। जो तीव्र एवं जीर्ण रोगों की उत्पत्ति के मूल कारणों में एक है। जैसे ही रक्त वापस सतह की ओर तेजी से लौटता है, वह त्वचा के नीचे फैल जाता है, उसके छिद्रों को खोलता है और वहाँ की कोशिकाओं को शिथिल करता है तथा इस प्रकार त्वचा द्वारा रोगजनक पदार्थों को बाहर निकालता है।

हम ठंडा पानी क्यों पसंद करते हैं : कई प्राकृतिक चिकित्सक, जीर्ण रोगों में अभी भी कुनकुने या गरम पानी का प्रयोग गरम स्नान, भाप नहाना, विद्युत्प्रकाश स्नान, गरम बाथ, गरम सेंक आदि के रूप में करते हैं, फिर भी यूरोप के अधिकांश प्राकृतिक चिकित्सकों ने गरम पानी का प्रयोग छोड़ दिया है। प्रयोग के बाद इससे कमजोरी तथा शक्ति में कमी आती है, साथ ही कितने ही रोगियों में तो आशानुकूल परिणाम भी नहीं मिले, अपितु रोग के लक्षण बढ़े हैं।

शरीर पर गरम और ठंडे पानी के विविध प्रयोगों तथा अन्य उपचार विधियों के विभिन्न प्रभावों को हम क्रिया–प्रतिक्रिया सिद्धान्त से समझ सकते हैं। भौतिकी के नियमानुसार क्रिया–प्रतिक्रिया समान किन्तु विपरीत होती है। मानव शरीर को प्रभावित करने वाली प्रत्येक उपचारक क्रिया प्रथम, अस्थायी और द्वितीय स्थायी प्रभाव दिखाती है। द्वितीय स्थायी प्रभाव; प्रथम क्षणिक प्रभाव के विपरीत होता है।

शरीर पर हल्की गर्मी का क्षणिक प्रभाव, चाहे वह गरम हवा, पानी, भाप या प्रकाश का हो, तुरंत ही त्वचा की ओर रक्त प्रवाह बढ़ाता है, जिससे त्वचा गरम और लाल हो जाती है। इसके बाद के द्वितीय और स्थायी प्रभाव से क्रिया–प्रतिक्रिया के सिद्धान्त के अनुसार रक्त वापस भीतर की ओर लौटता है। इससे त्वचा निस्तेज होती है, उसमें रक्त की कमी आ जाती है, कंपकंपी होती है और ठंड लगने की संभावना बढ़ जाती है।

इसके विपरीत, ठंडे पानी के क्षणिक प्रभाव से सारा शरीर विशेषतः त्वचा ठंडक महसूस करती है और वह रक्त को भीतर की ओर प्रवाहित करती है। इससे त्वचा ठंडी हो जाती है, उसमें रक्त की कमी हो जाती है, जिसकी सूचना संदेशवाही तंत्रिकाओं से मस्तिष्क के केन्द्र को पहुँचती है। जो रक्त परिभ्रमण नियंत्रण केंद्र को आदेश देता है, "तुरंत ही त्वचा तक रक्त पहुँचाओ।" परिणाम स्वरूप रक्तसंचार की हलचल बढ़ती है और सारे शरीर की क्रिया बढ़ जाती है। रक्त तीव्र गति से, रक्त की कमी वाली त्वचा की ओर बढ़ता है। त्वचा गरम और लाल हो जाती है। त्वचा का गुलाबी रंग और स्वास्थ्य लौट आता है। यही इसका द्वितीय प्रभाव है। दूसरे शब्दों में उचित प्रकार से प्रयुक्त ठंडे जल के बाद अच्छी प्रतिक्रिया होती है तथा इसके साथ–साथ अन्य कई स्थायी लाभ भी मिलते हैं।

गरम जलोपचार जैसे–भाप स्नान आदि से पहले रक्त त्वचा की ओर अधिक आता है, इससे कुछ मिनटों तक ही, निष्कासित द्रव्य बाहर निकलता है। यह हमेशा कमजोरी लाता है, जबकि शीतल जलोपचार का द्वितीय स्थायी प्रभाव, स्फूर्ति और शक्ति देता है, सहनशीलता बढ़ाता है तथा भाप स्नान की क्षणिक प्रतिक्रिया के विपरीत रोगजनित पदार्थों को दिन–रात बाहर निकालता रहता है।

अत्यधिक शीतल या लंबे समय तक शीतल जलोपचार का खतरा : केवल साधारण ताप का ठंडा जल नल या कुएं से निकलता है, ठंडे जलोपचार में काम में लिया जाना चाहिए। प्रदाह वाले स्थान के ऊपर बर्फ की थैली लगाना अथवा ज्वरावस्था में बर्फ मिले पानी की पट्टी रखना या प्रक्षालन निश्चित रूप से हानिकारक रहते हैं। इसी तरह जीर्ण रोगों के जलोपचार में भी बर्फ या बर्फ मिले पानी का प्रयोग न करें। ज्वरनाशक औषधियों या विषैले पूयहर द्रव्यों की तरह ही अत्यधिक ठंडा जल भी रोग को दबाने का ही कार्य करता है। स्नान, फव्वारे, डूश आदि का अधिक समय तक प्रयोग नहीं करना चाहिए। ठंडे पानी के प्रयोग की अवधि प्रत्येक रोगी की स्थिति को देखकर तथा उसकी प्रतिक्रिया को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करनी चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि कम समय का ठंडे जल का त्वरित प्रयोग शरीर पर उत्तेजक विद्युत चुम्बकीय प्रभाव डालता है।

जिला बुलन्दशहर से अखिल भारत हिन्दू महासभा को प्राप्त दान सूची मास सितम्बर २०१८

1.	डॉ० कुलदीप बरनवाल, प्रधानाचार्य, जी० जी० हिन्दू इण्टर कॉलेज, बुध बाजार, स्टेशन रोड, मुरादाबाद–२४४००१ (प्रथम बार भेंट होने पर सहयोग)	250/-
2.	कौशल कुमार शर्मा, बुलन्दशहर (५४वीं वर्षगाँठ पर दान)	251/-
3.	प्रोफेसर राम सिंह 'रमदा' ५–४५१/१, तिकोनिया–गुरूतेग बहादुर मार्ग, हल्द्वानी (नैनीताल) २६३१४१) (हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर की पुस्तक भेंट करने पर सहयोग)	200/-
4.	सतीश चन्द गोयल आदर्श नगर, बुलन्दशहर (७६वी वर्षगाँठ पर दान)	101/-
	टोटल	802/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

नारियल एक गुण अनेक

✍ डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

हमारे देश में कोई भी धार्मिक या सामाजिक समारोह हो, उसका प्रारंभ श्रीफल या नारियल से होता है। यह एक अत्यंत उपयोगी फल है। काया को ऊर्जा प्रदान करने वाले समस्त तत्व इसमें पाए जाते हैं। पाचक रस भी इसमें पाया जाता है। यह विटामिन ए, प्रोटीन व खनिज तत्वों से ओत–प्रोत फल है। इसमें वसा, प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस व लोहा भी काफी मात्रा में पाए जाते हैं। खाने में रसदार होने के साथ–साथ ही व्याधियों में यह विश्वसनीय औषधि है। यही नहीं, यदि सौंदर्य की दृष्टि से देखा जाए, तो नारी सौंदर्य बढ़ाने में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

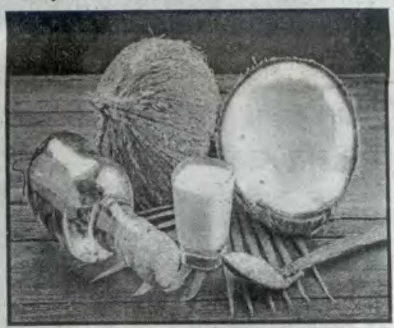

परिचय : नारियल का पेड़ बहुत बड़ा होता है। यह खजूर एवं ताड़ के पेड़ों की भाँति एकदम सीधा एवं ऊँचा होता है। इसके ऊपर के हिस्से में खजूर की भाँति पत्ते लगते हैं। उन्हीं पत्तों के मध्य नारियल लगते हैं।

गुणधर्म : आयुर्वेद के अनुसार नारियल भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्धक, कठिनता से पचने वाला, बस्तिशोधक, बलकारक, पौष्टिक, कफकारक, जायकेदार, संकोचक एवं शोथ, तृषा, दाह, पित्त, वातपित्त, रक्तविकार एवं क्षत क्षय का शमन करता है।

औषधीय प्रयोग : औषधि के रूप में—नारियल का तेल १०० मि.ली., आधा नींबू का रस डालकर मालिश करने से त्वचा रोग, विशेषकर खुजली में फायदा होता है या १०० मि.ली. तेल में शुद्ध देशी कपूर मिलाकर लगाने से रक्त विकारजन्य व्याधि खाज़–खुजली (कंडु) दूर हो जाते हैं। इसी तेल को रात में सोते समय दाद पर लगाएँ। कुछ ही दिनों में दाद ठीक हो जाएगा, नारियल का तेल तथा चूने का पानी दोनों को समभाग लेकर खूब फेंट लें, इससे वह जमकर मलहम की शक्ल में आ जाएगा। इस मलहम को आग से जले हुए शरीर के किसी भी स्थान पर लगाने से दर्द और जलन दूर हो जाती है तथा कुछ दिनों के निरंतर प्रयोग से घाव भी अच्छा हो जाता है। जल जाने पर तुलसी का रस और नारियल का तेल फेंटकर लगाने से भी जलन मिटती है। यदि फफोला पड़ गया है या घाव हो, तो शीघ्र ठीक हो जाता है। यदि हाथ–पैर की अंगुलियाँ बहुत सख्त और मोटी हैं, नाखून भी थोड़े बढ़ते हैं, फिर टूट जाते हैं, तो सप्ताह में तीन बार हाथ–पैर की गुनगुने नारियल के तेल से मालिश करें। नाखून बढ़ाने के लिए मालिश शेष पृष्ठ 11 पर

सौमनस्य का सौभाग्य व्रत पर्व करवा चौथ

साभार-अयोध्या संवाद

कार्तिक माह की सौभाग्य व्रत पर्व की कृष्णपक्ष की चतुर्थी शास्त्रीय रूप से 'करक चतुर्थी', लोकभाषा में करवा चौथ कही जाती है। इस सौभाग्य व्रत में मिट्टी के टोंटीदार कसए (कुल्हड़) से करक चतुर्थी, करवा चौथ पड़ा है। वर्ष भर की चार, बड़ी चौथ में यह सबसे बड़ी मानी जाती है।

करवा चौथ व्रत पर्व की कहानी से, जैसे गणगौर व्रत की कहानियों से व्रत का उदय और अवधारणा ज्ञात होती है वैसे ज्ञात नहीं होती। यह व्रत कथा तो सात भाईयों की बहन, ब्राह्मण की बींझा बेटी के छोटे भाई की चलनी में चाँद दिखाकर व्रत खण्डित करने से, उसके प्रतिकूल प्रभाव से पति की मृत्यु, बींझा का वर्ष भर जंगल में मृत पति की सेवा करने और चौथ माता की पूजा से उसके जीवित होने, सुहाग बहोरने की कहानी कहती है पर, लोकगीतों से लोक जीवन में इस व्रत के प्रचलित रहे आने के संकेत मिलते हैं। एक गीत में पत्नी अपने पति से कहती है मैं तो आज करवा चौथ का व्रत किये हूँ, आज मुझसे छेड़छाड़ मत करो–

''मैं तो करवा चौथ उपासी
आजु मोले मति अटकै''

एक गीत में करवा चौथ के चन्द्रमा को व्रती स्त्री के दही स अर्ध्य देने का भी उल्लेख है–

मैं तो बरत रही करवा चौथ
दहीनु के अरथ दिये
मैंने माँगी कौसिल्या सी सासु
ससुर राजा जसरथ से

इस व्रत की यही बड़ी खासियत है कि हरतालिका, गणगौर तीज आदि सुहाग व्रतों में चन्द्रमा को अर्ध्य दिया जाता है। इनके साथ चलनी में चन्द्रमा के दर्शन करना करवा चौथ की कहानी का अंश जो सभी प्रान्तों में, पंजाब में खासतौर से प्रमुखता पा गया है।

करवा चौथ की पूजा की संरचना की रीतियों में उत्तर भारत, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, पंजाब में काफी वैविध्य है। मुख्यतः यह व्रत पर्व पंजाब उत्तर भारत का और मध्य प्रदेश का है। यहाँ पूजा की संरचना में काफी विस्तार है, इस व्रत पर्व पर कही सुनी जाती कहानी के भी कई पक्ष हैं, पर करवा चौथ की पूजा में मिट्टी का टोंटीदार कुल्हड़, जल से भरा, ऊपर दीपक पर रखी विशेष वस्तुएँ, निर्जल व्रत, श्रृंगार की सभी नई वस्तुओं से व्रती महिला के १६ श्रृंगार दीवार पर करवा चौथ और गौर बना उनकी पूजा कर कहानी सुनना, और चारघड़ी के चन्द्रमा चौघड़ियाँ की रात में चन्द्रमा को अर्ध्य देकर कसए के बचे पानी से पति को छींटे मारना और वही जल ग्रहण कर व्रत खोलना, ये सर्वत्र ही करवा चौथ की पूजा की संरचना के अनिवार्य घटक

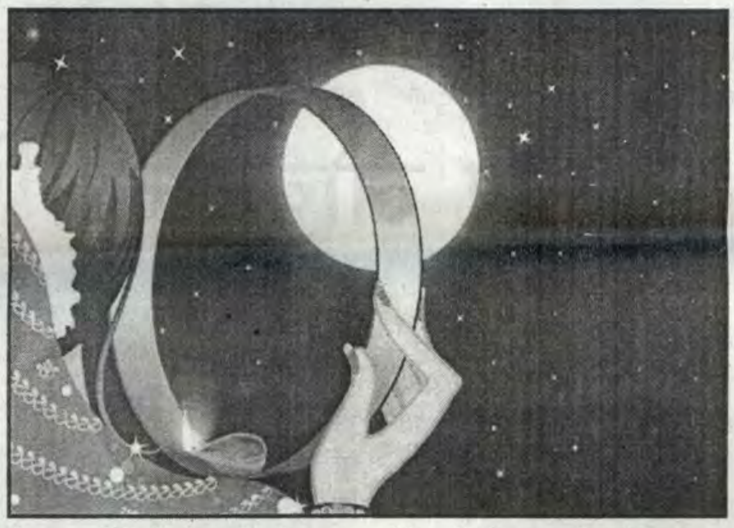

हैं। इन रीतियों से बनी संरचना के, व्रत पर्व की अवधारणा के मिथकीय अर्थ भी हैं। 'सरगी' पंजाब, हरियाणा की करवा चौथ पूजा का विशेष पक्ष है, यहाँ करवा चौथ की पूजा में उत्सव धर्मी पक्ष अधिक है। सास नई बहू को सुबह–सुबह दूध फेनी सेंवई, खाने को और सारी श्रृंगार की वस्तुएँ साड़ी आदि करवा चौथ पर देती है। नारियल का पानी भी, जिससे उसे दिन भर, प्यास न लगे। हरियाणा में बहू की पहली करवा चौथ मायके में होती है और सरर्ग का सामान ससुराल से आता है। पूजा के बाद का 'बायना' ससुराल जाता है। इस बायने में और करवा चौथ मइया को लगने वाले नैवेद्य में भी प्रान्त भेद है। मालवा में १३ 'खाजें' चढ़ाने को बनते हैं। इनका बायना भेजा जाता है। चौथ को रमास, चावल, लपसी और मीठा दलिया बनता है। रमास कार्तिक में आते हैं, नवान्न हैं। चौथ मइया को चावल लपसी का भोग लगता है। उत्तर भारत में पूड़ी हलवा और गुलगुले नैवेद्य भी हैं और बायना भी। मध्यप्रदेश में भी यही। पर, बहुत जगह गुलगुले भी रहते हैं। उत्तर भारत में खत्रियों और उनके ब्राह्मण पुरोहितों में करवा चौथ की पूजा अन्य समुदायों से काफी भिन्न है। इनमें बायने और पूजा के लिए १० फीकी मठरी और १० गुलगुले बनते हैं। एक मठरी और एक गुलगुला बची में छेद वाला बनता है जो कसए के ढक्कन दिये के ऊपर रखा जाता है। अर्ध्य देते समय मठरी गुलगुले के छेद से चन्द्रमा के दर्शन किये जाते हैं।

खत्रियों के अर्ध्य देने की प्रक्रिया भी कई चरण वाली और सबसे अलग है। व्रती स्त्री किसी के बताने पर कि चन्द्रमा निकल आया वह स्वयं नहीं देखती अर्ध्य देने जाती है। सबसे पहले दीपक चलनी से, फिर अपनी साड़ी के पल्लू में से उसके बाद मठरी और गुलगुले से मुँह जुठार लेती है। खत्रियों में शरद पूर्णिमा और अनन्त चतुदर्शी भी सुहाग के व्रत माने जाते हैं। इन पर भी व्रत के दिन १४ चन्द्रकला अन्त चतुदर्शी को, ११ पूड़ी लपसी शरदपूर्णिमा को मंस कर चन्द्रमा को अर्ध्य दिया जाता है। उत्तर भारत, राजस्थान में, मध्य प्रदेश में करूआ भी खूब सजाया जाता है। उसके गले में कलावा बाँधते हैं। टोंटी में चार सींके लगाते हैं। ढक्कन के दिये के ऊपर काले तिल जौ और पैसे रखते हैं। पूजा की थाली में रोली चावल धूप दीप फूल के साथ दूब अवश्य रहती है। शिव–पार्वती, गणेश की मिट्टी की मूर्तियों को भी पाटकर दूब में बिठाते हैं। अब तो घरों में चाँदी के शिव पार्वती पूजा के लिए रख लिये जाते हैं। कहीं–कहीं चित्रों के कैलेण्डर भी। कोटा में करवा चौथ पर भी जवारे बोये जाते हैं।

कुछ स्थानों पर करवा चौथ की कहानी को स्पष्ट करती करवा चौथ–सात भाई, सात भाभी, एक बहन, गणेश, शिव, पार्वती, पेड़ के पीछे चलनी में दिया रखकर चाँद दिखाता भाई दीवार पर, चौरीठा (हल्दी पड़ा चावल का घोल) से काढ़ी जाती है। करवा चौथ के इन भावों में स्थानगत वैविध्य भी मिलता है पर मूलभत अन्तर नहीं मिलता। मानव में कहीं–कहीं करवा चौथ का चलनी बताना चित्र खड़ी गेरू से भी बनता है और पूजा शेष पृष्ठ 11 पर

जीवन-जीने की कला

✍ रश्मि अग्रवाल

संसार में ताल से ताल मिला कर चलना एक अनूठी कला है क्योंकि यह दुनिया इतनी विशाल है कि इसमें तुम्हारा अस्तित्व क्या? कुछ भी नहीं है। यहाँ तो करोड़ों लोग आये, जीये और चल बसे। ऐसे ही तुम भी चले जाओगे इसलिए स्वयं के जीवन को परमान्नद व स्वतंत्र तरीके से जीने के कुछ बिन्दुओं पर नजर डालें जैसे–

जीवन संदर्भ का ज्ञान : प्रत्येक प्राणी का जीवन कितना है जैसे सागर में एक बूंद, जिसमें सुख रूपी तरंगे आती हैं, तन व मन को भिगोती हैं और चली जाती हैं व दुःख रूपी तरंगे सुख–समद्धि, सब बहा ले जाती हैं, इसलिए काल के परिवेष को जानकर अपनी वास्तविकता एवं अस्तित्व का ज्ञान करके जीना ही एक विद्या है। छोटी–छोटी चीजों के लिए परेशान होना छोड़ आगे बढ़ें क्योंकि जीवन में घटनाएँ तो घटती ही रहती हैं बस उसी में संतुलन व धैर्य बनाकर चलना, दृढ़ संकल्प व विश्वास जैसे– अनाज के साथ छिलका जैसे अनुभव करना ही जीवन का संदर्भ है।

स्वयं की भावनाओं का परिपोषण : ये संसार प्रेम से ओत–प्रोत है और मानव एक सूखी लकड़ी समान है, जब तक आपके जीवन में कुछ रस नहीं होगा तब तक लोग आपके पास कैसे आयेंगे? पर स्वयं के सुख की लालसा रखने वाले व्यक्ति को ये गुर नहीं आता क्योंकि वो सिर्फ अपनी सेवा, सुख–सुविधाओं की चाहत रखता है और तबही उसका कल्याण नहीं हो पाता। वहीं किसी से भी अपेक्षा रखना भी हमें पराधीन बना देता है क्योंकि अपेक्षा ही उपेक्षा की जननी है। इसलिए व्यक्तिगत निराशा हो या कोई भी दुःख उससे बाहर आने के लिए सामूहिक दुःख को बांटना चाहिए। इसी प्रकार व्यक्तिगत सुख को बढ़ाने के लिए सामुहिक सुख का हिस्सा बनना चाहिए बजाए यह सोचने के कि 'मेरा क्या होगा' और मैं दूसरों से क्या प्राप्त कर सकता हूँ? बल्कि ये सोचो कि मैं दूसरों के लिए क्या कर सकता हूँ?

स्वयं की परिसीमाओं को जाने व परिवर्तन करें : जब तक मनुष्य शांत व प्रसन्न रहता है जब तक वो किसी सीमा तक नहीं पहुंच पाता पर जब निराशाजनक परिस्थितियां सम्मुख होती हैं, तब ही स्वयं की सीमा व तुलना का बोध होता है कि इस अनुकूल/ प्रतिकूल समय में आप स्वयं पर विजय प्राप्त कर पाते हैं या हार जाते हैं क्योंकि चाहत व इच्छा ही बंधन है, वहीं न लेने की इच्छा, व्यवहार में परिमार्थ की भावना ही हमें संसार से ऊपर उठकर कमल के फूल की भांति जीवन जीने व सीमाओं को जान कर परिवर्तन करना ही जीवन जीने की कला है।

उपरोक्त कथन का सार येही है कि इस संकल्प के साथ जियें कि संसार रूपी भवसागर से पार उतरने के लिए मैं सर्वथा त्याग समर्पण व सेवा का भाव रखूंगा/रखूंगी। जैसे– रबड़ की गेंद हर स्थान पर फुदकते हुए अपना कार्य करती है उसी प्रकार हम भी एक ही भावना व विचारों से न चिपकते हुए सुंदर कार्य करें व लेने की इच्छा को त्याग मुक्ति व परम कल्याण के साथ जीवन जीने की अनूठी कला अपनायें।

....और लोकतन्त्र पिटता रहा

आनन्द मिश्र 'अभय'

जी हाँ; लोकतन्त्र पिट रहा था; पीटा जा रहा था; पिटवाया जा रहा था वह भी एक मुख्यमन्त्री के सामने, मुख्यमन्त्री के आवास पर मुख्यमंत्री के गुर्गों द्वारा मुख्यमन्त्री के इशारे पर कमरा बन्द करके!! हद हो गयी। क्या कभी कोई स्वप्न में भी कल्पना कर सकता था, कर सकता है कि एक मुख्यमन्त्री रात के १२ बजे अपने आवास पर एक तथाकथित बैठक बुलाये, अपने सलाहकार द्वारा उस बैठक में सम्मिलित होने के लिए अपने प्रदेश के मुख्य सचिव को आहूत करे; मुख्यसचिव को आने के लिए बाध्य करे और उनके वहाँ पहुँचते ही बहाने से कमरा बन्द कराकर अपने विधायकों से उन्हें पिटवाये इसलिए कि मुख्य सचिव माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों का उल्लंघन करने से इनकार कर दे। ध्यान रहे, मुख्य सचिव प्रदेश का सर्वोच्च कार्यपालक अधिकारी और अपने संवर्ग (आई.ए.एस.) का वरिष्ठतम सदस्य होता है। अंग्रेजी शासन काल से लेकर स्वतन्त्रता के आज तक के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ; परन्तु 'ई मुल्क हिन्दुस्तान अजब अस्त।' यहाँ 'रु सियाही मुफ्तस्त' 'खर सवारी मुफ्तस्त' के साथ ही 'ढोल दमामा मुफ्तस्त' है। छल-कपट, धूर्त्तता, झूठ, बेहयाई, बेशर्मी की यदि कोई ओलम्पिक जैसी प्रतियोगिता हो, तो दिल्ली का यह अराजकतावादी, षड्यंत्रकारी, विश्वासघाती और पराकाष्ठा का निर्लज्ज प्रतीक मुख्यमंत्री निश्चय ही स्वर्णपदक ले जायेगा। इस मुख्यमंत्री का नाम है अरविन्द केजरीवाला और उन मुख्य सचिव का नाम है अंशु प्रकाश, जो अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा, शालीन स्वभाव और सुदीर्घ अनुभव के साथ ही सफल प्रशासन के लिए जाने जाते हैं और स्वयम् केजरीवाल ने जिन्हें केन्द्र सरकार से आग्रह करके लिया था। अब तो किसी को भी इस बात में कोई सन्देह नहीं रह गया होगा कि 'आम आदमी पार्टी' एक राजनीतिक पार्टी नहीं, नितान्त असामाजिक, आपराधिक उद्दण्ड, उच्छृंखल और निर्लज्ज गुण्डा तत्वों का एक गिरोह है। ऐसे गुण्डों के हाथों लोकतन्त्र की ऐसी खुल्लमखुल्ला हत्या कराकर उनका सरगना चुपचाप चेन्नई के लिए 'फुर्र' हो जाता है 'बैंक लुटेरों' की तरह और इस देश का संविधान, सारे कानून, सार नियम-कायदे एक-दूसरे का मुँह ताकते रह जाते हैं। क्या हमारी विधि-व्यवस्था इतनी लूली-लँगड़ी हो चुकी है कि ऐसे राजनीतिक माफिया तत्वों को तत्काल जेल के सींखचों में नहीं ठूँस सकती? सरकार का 'प्रताप' क्या इतना क्षीण हो चुका है कि ऐसे 'मुस्तण्ड' राजनीतिक का चोगा ओढ़कर सत्ता को अपनी चेरी, बन्धक बनाकर नंगा नाच करके देश की प्रतिष्ठा की जगहँसाई कराते रहें और हम टुकुर-टुकुर देखते रहें!

यहाँ पर सहज ही याद आ जाता है १६४८-४६ का वह जमाना, जब तब के 'संयुक्त राज्य आगरा व अवध' (बाद में उत्तर प्रदेश-तब उत्तराखण्ड पृथक राज्य नहीं बना था) के प्रधानमन्त्री (प्रीमियर) पं. गोविन्द वल्लभ पन्त थे। नयी-नयी स्वतन्त्रता मिली थी। जनपद शाहजहाँपुर में एक क्रान्तिकारी थे प्रेम किशन खन्ना, काकोरी रेल डकैती के सहभागी। उन्हें न जाने कैसे भ्रम हो गया कि अब तो उनकी अर्थात् कांग्रेस की सरकार है, तो जिले का कलेक्टर भला कैसे उनकी बात टाल सकता है? तब नये-नये आये श्री भजनलाल चतुर्वेदी कलेक्टर (जिलाधिकारी) थे। खन्ना जी की अनुचित बातें मानने से जब उन्होंने साफ इंकार कर दिया, तो खन्ना जी ने उनकी शिकायत पन्त जी से की। पन्त जी ने फोन पर कलेक्टर से पूछा कि क्या बात है? खन्ना जी क्यों नाराज हैं? भजनलाल चतुर्वेदी का दो टूक उत्तर था-'सर! आपने भजनलाल चतुर्वेदी को जिले का कलेक्टर बनाकर भेजा है और जिले में एक ही कलेक्टर होता है दो नहीं।' पन्त जी ने कुछ नहीं कहा और फोन रख दिया। भजनलाल चतुर्वेदी दन्नाटे से कलेक्टरी करते रहे, खन्ना जी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाये। आज तक शाहजहाँपुर वाले अपने उन अत्यन्त लोकप्रिय कलेक्टर को बड़े आदर से याद करते हैं। स्पष्ट है कि प्रशासन में राजनेताओं का अनुचित हस्तक्षेप पं. गाविन्द वल्लभ पन्त को पसन्द नहीं था और अपने अधिकारियों की बात को उचित समान देते रहने के कारण आज तक लोग उन्हें एक सफल और श्रेष्ठ प्रशासक मुख्यमन्त्री के रूप में आदरपूर्वक याद करते हैं। उत्तर प्रदेश में यह परम्परा तब टूटी, जब मुलायम सिंह, मायावती और अखिलेश के हाथों में सत्ता आयी। कांग्रेस, संयुक्त विधायक दल और जनता पार्टी के शासन में जिस अधिकारी को राजनेता 'असुविधाज़नक' समझते थे, उसका स्थानान्तरण कराने का प्रयत्न करते थे और उसके लिए वे दो कथकण्डे अपनाते थे-१, आर.एस.एस. विचारवाला है और २. मुस्लिमों को उकसाकर दंगा करा दो। दंगा होते ही जिला अधिकारी और पुलिस अधिकारी के साथ ही कुछ अन्य छोटे अधिकारियों का 'बिस्तर गोल' हो जाता था। और नेता को अपनी डींग हाँकने का मौका मिल जाता था। परन्तु ऐसा तो कभी सोचा भी नहीं जा सकता था कि कोई मुख्यमन्त्री अपने प्रदेश के वरिष्ठतम प्रशासक, मुख्य सचिव को अपने आवास पर मीटिंग के बहाने आधी रात को आहूत कर अपने गुर्गों से कमरा बन्द करके पिटवाये और चुपके से दूसरे प्रदेश के लिए विमान से उड़ जाये! 'लोकतन्त्र खतरे में है' की हाँक लगानेवाले न जाने किस बिल में जा घुसे हैं? लोकतन्त्र ही नहीं, इन देशघातियों को छुट्टा साँड़' की तरह घमूते रहने देना राष्ट्र की अस्मिता के लिए किसी भी दिन घोर संकट उपस्थित कर सकता है। सावधान! 'कृत्या' आँख गड़ाये अवसर की राह देख रही है!!

तीन अन्तरराष्ट्रीय तिलंगे

वर्त्तमान काल में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर तीन देश जाने-माने 'गुण्डा देश' हैं- १. पाकिस्तान, २. चीन, ३. उत्तरी कोरिया। इसके पहले संयुक्त राज्य अमेरिका, पाकिस्तान और चीन थे। अमेरिका को जब पाकिस्तान की धूर्त्तता और छल-प्रपञ्च की राजनीति और कूटनीति का साक्षात्कार हुआ, तो अब डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के पश्चात उसके प्रति यथार्थता के धरातल पर उतरकर पाकिस्तान की रीति-नीति का तदनुसार प्रतिकार नहीं कर रहा। आये दिन हमारे वीर जवानों पर आक्रमण होते हैं; पाकिस्तानी घुसपैठियों और आतंकवादियों की गोलियों के शिकार न केवल रक्षाकर्मी; अपितु सामान्य जन भी होते रहते हैं, उनके विरुद्ध कार्यवाही के समय स्थानीय मुस्लिम युवा-समूह पत्थरबाजी कर उन्हें बचाने का हर सम्भव प्रयत्न करते हैं ओर भाजपा के सहयोग, सद्भाव और सौजन्य की उपेक्षा करती हुई महबूबा मुफ्ती जम्मू-कश्मीर की संयुक्त सरकार में रहती हुई भी यह सब देखकर भी अनदेखा कर रही हैं। वे ६ हजार से अधिक पत्थरबाजों को क्षण मात्र में जेल से रिहा कर देने के आदेश दे देती हैं; उनके परिजनों को सारी सरकारी सुविधाओं का खजाना खोल देती हैं और बड़ी हेकड़ी के साथ हमारे सेनाधिकारियों के विरुद्ध आपराधिक कठोर धाराओं में पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने से भी नहीं चूकती। अहसान फरामोशी तथा पाकिस्तानपरस्ती और किसे कहते हैं? बाप ने देश का गृहमंत्री बनते ही पाँच आतंकवादी छोड़े थे, बेटी पाँच हजार नहीं, नौ हजार को छोड़कर प्रसन्न होती है। परिणामतः विधानसभा में एक विधायक 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' का नारा लगाता है और उसे कोई कुछ नहीं कहता। उपर्युक्त स्थिति देश विभाजन का नैसर्गिक फलादेश है। जिन्हें पाकिस्तान जाना या भेजा जाना चाहिए था, वे यहीं बने रहे और जिन्हें नहीं जाना चाहिए था, वे चले गये या चले जाने को मजबूर कर दिये गये। उदाहरण देखें-एक थे चौधरी सितवत अली और दूसरे थे मुंशी एजाज रसूल। दोनों लड्डुओं के लिए प्रसिद्ध सण्डीला (जनपद हरदोई, उ.प.) के जमीदार खानदानों से। सितवत अली जिन्दगी भर कांग्रेस के पक्के कार्यकर्त्ता रहे और एजाज रसूल व उनकी पत्नी कुदेसिया बेगम (बेगम एजाज रसूल के नाम से प्रसिद्ध) दोनों मुस्लिम लीग के कट्टर अनुयायी। १६५२ के चुनावों में जब विधानसभा के टिकट बाँटे गये, तो अपनी बेगम की बदौलत कांग्रेस का टिकट मिला 'मुंशी' से नवाब बने एजाज रसूल को, तो दुःखी होकर चौधरी सितवत अली (टिकट के असली हकदार) पाकिस्तान चले गये। क्यों? सर मारिस हैलेट (अंग्रेज गवर्नर) की चहेती रही बेगम बाद में प्रधानमन्त्री नेहरू जी की चहेती बन गयी थी। खद्दर की अचकन नवाब साहिब ने। मजे की बात यह कि इन्हीं बेगम साहिबा को भारत की सरकार ने 'पद्मभूषण' अलंकरण दिया जाता है। ऐसे ही हाफिज मोहम्मद इब्राहीम, नवाब छतारी, नवाब भोपाल, नवाब टोंक, अर्काट का नवाब आदि सभी दुर्द्धर्ष लीगी रातोरात कांग्रेसी देशभक्त बन गये।

मत्स्स-पुच्छ

गत ७० वर्षों में देश को एक नहीं, दो नहीं, ३-३ काली रातों की त्रासदी झेलनी पड़ी है। पहली काली रात थी १४-१५ अगस्त, १६४७ के बीच की वह कालरात्रि, जब स्वतन्त्रता के साथ मजहब के आधार पर देश का विभाजन हुआ, पाकिस्तान बना। विश्व इतिहास की सम्भवतः वह सबसे भयंकर कालरात्रि थी। दूसरी कालरात्रि २५-२६ जून, १६७५ के बीच की जब अर्द्धरात्रि को अवैध अध्यादेश से आपालकाल लागू कर देशवासियों से जीवन का अधिकार तक छीन लिया गया था। और अब एक ऐसी ही रात जब दिल्ली के मुख्यमंत्री द्वारा अपने आवास पर पूर्व नियोजित षड्यन्त्र के अधीन अपने मुख्य सचिव को पिटवाना। पहली काललीरात देश विभाजन की, दूसरी आपातकाल की और तीसरी यह। ऐसे में कौन कहता है कि लोकतंत्र खतरे में नहीं हैं?

श्रीराम जन्मभूमि वास्तविक तथ्य

✍ श्री चम्पतराय

अयोध्या का विवाद मन्दिर अथवा मस्जिद का सामान्य विवाद नहीं है; यह भगवान की जन्मभूमि को वापस प्राप्त करने का संघर्ष है। यह हिन्दुस्थान के स्वाभिमान का संघर्ष है। विदेशी आक्रान्ताओं की याद दिलाने वाले सभी चिहन अब भारत से हटने ही चाहिए।

हिन्दू समाज की धारणा है कि अयोध्या के मोहल्ला रामकोट में जिस स्थान पर तीन गुम्बदों वाला ढाँचा खड़ा था, वहाँ कभी एक मन्दिर था, जो राम जन्मभूमि मन्दिर कहलाता था। इस मन्दिर को ईस्वी सन १५२८ में बाबर के आदेश पर तोड़ा गया। हम यह स्थान वापस लेकर ही शान्त होंगे।

इसके विपरीत मुस्लिमों का तर्क था कि तीन गुम्बदों वाला विवादित ढाँचा सरयू नदी के किनारे खाली पड़ी बंजर भूमि पर इबादत के लिए बनाया गया कोई मन्दिर नहीं तोड़ा गया। अतः इस ढाँचे को सार्वजनिक मस्जिद घोषित किया जाये।

वर्ष १९६१ में मुस्लिम नेतृत्व ने तत्कालीन प्रधानमंत्री महोदय को वचन दिया कि 'यदि यह सिद्ध हो गया कि मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाई गई है तो वे स्वेच्छा से यह स्थान हिन्दू समाज को सौंप देंगे।

६ दिसम्बर, १९९२ को जब यह जीर्ण–शीर्ण ढाँचा ढह गया, तो उसकी खोखली दीवारों में से प्राचीन मन्दिरों के खण्डित अवशेष निकले, साथ ही साथ दीवार में चिना गया एक शिलालेख भी प्राप्त हुआ। ये सभी वस्तुएँ न्यायपालिका के संरक्षण में अयोध्या में सुरक्षित रखी हैं।

जनवरी, १९९३ में तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय से एक प्रश्न का उत्तर चाहा था। राष्ट्रपति महोदय का प्रश्न था कि ''अयोध्या में बाबरी मस्जिद जिस स्थान पर खड़ी थी, उस स्थान पर क्या इसके निर्माण के पहले कोई हिन्दू धार्मिक भवन अथवा कोई हिन्दू मन्दिर था, जिसे तोड़कर वह ढाँचा खड़ा किया गया?''.... इलाहाबाद उच्च न्यायालय में भी यही प्रश्न प्रमुखता से उठा कि हिन्दू समाज जिस स्थान को भगवान श्रीराम की जन्मभूमि मानता है, वहाँ बाबर के आक्रमण के पहले कभी कोई मन्दिर था अथवा नहीं था?

सर्वोच्च न्यायालय ने भारत सरकार से यह प्रश्न पूछे जाने का कारण जानना चाहा था, तब भारत सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को सितम्बर, १९९४ ई. में शपथपत्र दिया था कि यदि यह सिद्ध हो गया कि मन्दिर तोड़कर तीन गुम्बदों वाले ढाँचे का निर्माण किया गया है, तो भारत सरकार हिन्दू समाज की भावनाओं के अनुसार कार्य करेगी और यदि यह सिद्ध हुआ कि उस स्थान पर कभी कोई मन्दिर नहीं था अतः कुछ भी तोड़ा नहीं गया, तो भारत सरकार मुस्लिमों की भावनाओं के अनुसार व्यवहार करेगी।

यह प्रश्न ही इलाहाबाद उच्च न्यायालय में मुख्य प्रश्न बना था। इसी प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए उच्च न्यायालय ने जन्मभूमि के स्थान के नीचे राडार तरंगों से फोटोग्राफी कराई। फोटोग्राफी करने वाले (कनाडा के) विशेषज्ञों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि जमीन के नीचे दूर–दूर तक भवन के अवशेष उपलब्ध हैं। इन्हें देखने के लिए वैज्ञानिक उत्खनन किया जाना चाहिए।

कनाडा के भू–वैज्ञानिक की सलाह पर उच्च न्यायालय ने भारत सरकार के पुरातत्व विभाग को उत्खनन का निर्देश दिया था। वर्ष २००३ में ६ महीने तक उत्खनन हुआ। २७ दीवारें मिलीं, दीवारों में नक्काशीदार पत्थर लगे हैं, ५२ ऐसी रचनाएँ मिलीं, जिन्हें खंभों का जमीन के नीचे आधार कहा गया, भिन्न–भिन्न स्तर पर ४ फर्श मिले, पानी की पक्की बावड़ी व उसमें उतरने के लिए अच्छी सुन्दर सीढ़ियाँ मिलीं, एक छोटे से मन्दिर की रचना मिली, जिसे पुरातत्ववेत्ताओं ने १२वीं शताब्दी का हिन्दू मन्दिर लिखा। पुरातत्ववेत्ताओं ने अपनी रिपोर्ट में यह लिखा कि उत्खनन में ज़ो–जो वस्तुएँ मिली हैं, वे सभी उत्तर भारतीय शैली के हिन्दू मन्दिर के वास्तु के अनुरूप हैं। अतः इस स्थान पर कभी एक मन्दिर था।

इस्लाम की मान्यताओं के अनुसार जोर–जबरदस्ती से प्राप्त की गई भूमि पर पढ़ी गई नमाज अल्लाह स्वीकार नहीं करते हैं और न ही ऐसी सम्पत्ति अल्लाह को समर्पित (वक्फ) की जा सकती है। किसी मन्दिर का विध्वंस करके उसके स्थान पर मस्जिद के निर्माण करने की अनुमति कुरआन व इस्लामम की मान्यताएँ नहीं देतीं। न्यायमूर्ति धर्मवीर शर्मा ने कुरआन व इस्लाम की मान्यताओं का उल्लेख करते हुए यह निर्णय दिया कि विजेता बाबर को भी विवादित भवन को मस्जिद के रूप में अल्लाह को समर्पित (वक्फ) करने का अधिकार नहीं था।

भगवान रामलला के अधिकार को स्थापित करने में केवल एक ही बाधा है, वह है न्यायमूर्ति एस.यू. खान व न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल द्वारा विवादित परिसर का तीन हिस्सों में विभाजन अर्थात् भगवान रामलला, निर्मोही अखाड़ा तथा सुन्नी वक्फ बोर्ड तीनों की विवादित परिसर का १/३ भाग प्राप्त करेंगे। यह ध्यान देने योग्य है कि यह मुकदमा सम्पत्ति के बँटवारे का मुकदमा नहीं था और निर्मोही अखाड़ा अथवा सुन्नी मुस्लिम वक्फ बोर्ड अथवा रामलला विराजमान तीनों में से किसी ने भी परिसर के बँटवारे का मुकदमा दायर नहीं किया था और न ही परिसर के बँटवारे की माँग की थी। अतः बँटवारे का आदेश देना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर करते समय इसी आशय की मौखिक टिप्पणी एक न्यायाधीश ने की थी।

फैजाबाद के जिला न्यायालय में पहला मुकदमा वर्ष १९५० में दायर हुआ था। जबकि इलाहाबाद उच्च न्यायालय की तीन न्यायाधीशों की पीठ ने ३० सितम्बर, २०१० को इसका फैसला दिया, निर्णय प्राप्त करने में ६० वर्ष लगे। सभी पक्षकारों ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर की है। सर्वोच्च न्यायालय में कितना समय लगेगा, यह भविष्यवाणी नहीं हो सकती।

जन्मभूमि की अदला–बदली नहीं की जाती। यह न खरीदी जा सकती है, न बेची जा सकती है और न ही दान दी जा सकती है। यह अपरिवर्तनीय है।

सम्पूर्ण विवाद अधिक से अधिक १५०० वर्ग गज भूमि का है, जिसकी लम्बाई–चौड़ाई अधिकतम १४०/१०० फीट होती है। भारत सरकार द्वारा अधिग्रहीत ७० एकड़ भूमि इससे अलग है तथा वह भारत सरकार के पास है, जिस पर कोई मुकदमा अदालत में लम्बित नहीं है। इसी ७० एकड़ भूखण्ड में लगभग ४५ एकड़ भूमि श्रीराम जन्मभूमि न्यास की है। इस भूमि का अधिग्रहण होने के बाद भी श्रीराम जन्मभूमि न्यास ने भारत सरकार से कभी कोई मुआवजा नहीं लिया। सम्पूर्ण विवादित स्थल व अधिग्रहीत जमीन

शेष पृष्ठ 10 पर

जय सिया राम

दुःख देकर सुख दिया हमेशा तुमने मुझको राम।
राम कृपा से पूर्ण हुऐ है मेरे सारे काम।
जय रघुनन्दन जय सिया राम।
जानकी बल्लभ सीता राम।
दुर्घटना से सदा बचाया तुमने ही रघुराई।
दूर तुम्हारे ही कारण प्रभु सारी हुई बुराई।
शत्रु या तो मीत बन गये या हो गये गुमनाम।
जय रघुनन्दन जय सिया राम।
जानकी बल्लभ सीता राम।
मैं जब भी भटका तुमने ही सही मार्ग दिखलाया।
बांधायें मेरी राहो की तुमने प्रभु मिटाया।
कृपा आपकी रही मिला जो मुझको श्रेष्ठ मुकाम।
जय रघुनन्दन जय सिया राम।
जानकी बल्लभ सीता राम।
मैं अनपढ़ था तुमने ही मुझको विद्वान बनांया।
अहंकार के अंधकार को मन से सदा हटाया।
मिला कृपा से प्रभु तुम्हारी ही मुझको सुखधाम।
जय रघुनन्दन जय सिया राम।
जस बल्लभ सीता राम।
आसक्ति से मुझे बचाकर भक्ति भाव जगाया।
मैं जब जब भी गिरा कहीं भी तुमने मुझे उठाया।
हर दलदल से मुझे बचाकर किया हृदय निष्काम।
जय रघुनन्दन जय सिया राम।
जानकी बल्लभ सीता राम।
जैसे अब तक कृपा करी हैं वही बनाये रखना।
पूरा तुम कर देना जो भी उचित हो मेरा सपना।
मुझे हारने कभी न देना कोई भी संग्राम।
जय रघुनन्दन जय सिया राम।
जानकी बल्लभ सीता राम।
जीवन के अब इस पड़ाव में मुझको छोड़ न देना।
मैं जैसा भी हूँ जो भी हूँ मुझको भूला न देना।
अन्त समय तक मुझ पर रखना अपनी दृष्टि ललाम।

हितेश कुमार शर्मा

वाल्मीकि जयंती पर विशेष

✍ डॉ. रामस्वरूप ब्रजपुरिया

महर्षि वाल्मीकि, श्रीराम के समकालीन यानि त्रेता युग के ही ऋषि कहे जाते हैं। ऋषि केवल कवि नहीं है, वह केवल ग्रंथ नहीं लिखता वह मानव के उत्थान हेतु खोज (रिसर्च) करता है इसलिए ऋषि है। कोई कवि ऋषि तभी हो सकता है जब वह पहले सत्य का अनुभव करता है और अनुभव को ही शब्दों में प्रकट करता है महर्षि वाल्मीकि ऐसे ही महाकवि थे। उन्होंने कविता में राम की कथा सर्वप्रथम लिखी इसलिए वे आदि महाकवि के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। महर्षि वाल्मीकि किसी ऐसे महामानव का इतिहास लिखना चाहते थे जिसमें मनुष्य में विकास की जितनी संभावना है वह पूर्णरूपेण विकसित हुई हो ताकि मानवता के विकास के लिए एक प्रेरक आदर्श प्रस्तुत किया जा सके। उन्होंने ऐसे व्यक्ति की जानकारी ऋषि नारद से जानना चाही क्योंकि वे अबाध गति से सर्वत्र भ्रमण करने वाले ऋषि थे। नारद ने कहा–

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।।
बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमान् शत्रुनिबर्हणः।

धर्मज्ञस्सत्यसंघश्च प्रजानांच हिते रतः।।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यस्समाधिमान्।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।

श्री वाल्मीकि ने स्वयं भी अध्ययन व अवलोकन करके यह अनुभव किया कि तत्कालीन रघुवंश शिरोमणि नृपदशरथ के पुत्र श्रीराम में जितने गुण वे एक व्यक्ति में देखना चाहते थे उससे कहीं अधिक गुण दिखाई दिये। तब वाल्मीकि ने उन गुणों को देखा ही नहीं अपितु जीवन के प्रसंगों में उनको अभिव्यक्त किया यों रामकथा का साहित्य रूप में प्रथम प्रणयन भी वाल्मीकि रामायण के राम अनुकरणीय राम है। उनका जीवन, व्यवहार, स्वभाव, कार्य प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में उतारने के लिए आदर्श है। यही

राम की सच्ची उपासना है। इसी रूप में राम की कथा लोक में प्रचलित रही है। त्रेता युग के बाद द्वापर युग में ज्ञान के स्थान में भक्ति की धारा वेग से बहने लगी और उस काल में भक्ति प्रधान पौराणिक साहित्य की रचना हुई, जिसके रचयिता वेदव्यास जी थे। निर्गुण निराकार ब्रह्म को सगुण रूप में प्रस्तुतीकरण करने वाला साहित्य रचा और उसने ज्ञान की धारा को कुछ विशेष बुद्धिजीवियों तक सीमित कर दिया। द्वापर भी व्यतीत हो गया कलियुग वर्तमान में है। इस लम्बे अंतराल में रामकथा ने अनेक रूप लिए। कई प्रकार की रामायणें लिखी गईं और उन कथाओं को अनेकों अंर्तकथाओं के साथ विभूषित किया गया है। पाँच सौ वर्ष पूर्व सत्रहवीं शताब्दी में जब भारत में आर्यों की राज्य सत्ता समाप्त और सत्ता दोनों ही प्रभावित हुए उस समय अकबर के शासन काल में भक्त शिरोमणि संत तुलसीदास जी का प्रादुर्भाव हुआ और उनके द्वारा रचित मानस का प्रणयन हुआ तो अन्य सभी राम कथायें लुप्तप्राय हो गई। राम कथा का मूल आधार या कथावस्तु तो वही रही जो वाल्मीकि ने लिखी किन्तु वह कथा एक नये रूप में और नये श्रृंगार के साथ जन–जन के मानस में उतरी। वाल्मीकि की रामायण का पठन–पाठन अब नहीं होता केवल रामचरितमानस ही जन–जन का कण्ठहार बन चुकी है।

दान/सहयोग सहायता द्वारा इन्द्रदेव, बुलन्दशहर माह आषाढ़ शक सम्वत् 1940 (अगस्त-सितम्बर 2018)

1.	श्री हरि नाम संकीर्तन मण्डल, बुलन्दशहर	100/-
2.	रक्षा बन्धन पर उपहार	200/-
3.	वैदिक संसार (मासिक) इन्दौर	600/-
4.	आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी	1000/-
5.	राजकुमार के गृह प्रवेश पर भेंट	200/-
6.	दो सगे सम्बन्धियों को सहायतार्थ	900/-
7.	आर्य समाज, स्टेशन रोड़, मुरादाबार	200/-
8.	श्री मती विधि पुरी, मुरादाबाद	5100/-
9.	अखाड़ा श्री महाकाली कमेटी, बुलन्दशहर	250/-
10.	हिन्दू सभा वार्ता, नई दिल्ली	3750/-
	टोटल	12300/-

इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक, सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती ३१ अक्टूबर

आज हम जिस विशाल भारत को देखते हैं उसकी कल्पना बिना वल्लभ भाई पटेल के शायद पूरी नहीं हो पाती। सरदार वल्लभ भाई पटेल एक ऐसे इंसान थे जिन्होंने देश के छोटे–छोटे रजवाड़ों और राजघरानों को एक कर भारत में सम्मिलित किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जब भी बात होती है तो सरदार पटेल का नाम सबसे पहले ध्यान में आता है। उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, नेतृत्व कौशल का ही कमाल था कि ६०० देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय हो सका।

भारत के प्रथम गृह मंत्री और प्रथम उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल को लौह पुरुष का दर्जा प्राप्त था। उनके द्वारा किए गए साहसिक कार्यों की वजह से ही उन्हें लौह पुरुष और सरदार जैसे विशेषणों से नवाजा गया। बिस्मार्क ने जिस तरह जर्मनी के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई उसी तरह वल्लभ भाई पटेल ने भी आजाद भारत को एक विशाल राष्ट्र बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। बिस्मार्क को जहाँ जर्मनी का 'आयरन चांसलर' कहा जाता है वहीं पटेल भारत के लौह पुरुष कहलाते हैं। वल्लभ भाई पटेल का जन्म ३१ अक्टूबर १८७५ को गुजरात के नाडियाड में उनके ननिहाल में हुआ। वह खेड़ा जिले के कारमसद में रहने वाले झावेर भाई पटेल की चौथी संतान थे, उनकी माता का नाम लाडबा पटेल था। बचपन से ही उनके परिवार ने उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। हालाँकि १६ साल में उनका विवाह कर दिया गया था पर उन्होंने अपने विवाह को अपनी पढ़ाई के रास्ते में नहीं आने दिया। २२ साल की उम्र में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और जिला अधिवक्ता की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, जिससे उन्हें वकालत करने की अनुमति मिली।

अपनी वकालत के दौरान उन्होंने कई बार ऐसे केस लड़े जिसे दूसरे निरस और हारा हुआ मानते थे। उनकी प्रभावशाली वकालत का ही कमाल था कि उनकी प्रसिद्धि दिनों–दिन बढ़ती चली गई। गम्भीर और शालीन पटेल अपने उच्चस्तरीय तौर–तरीकों और चुस्त अंग्रेजी पहनावे के लिए भी जाने जाते थे। लेकिन गाँधी जी के प्रभाव में आने के बाद जैसे उनकी राह ही बदल गई। १९१७ में मोहनदास करमचंद गाँधी के संपर्क में आने के बाद उन्होंने ब्रिटिश राज की नीतियों के विरोध में अहिंसक और नागरिक अवज्ञा आन्दोलन के जरिए खेड़ा, बरसाड़ और बारदोली के किसानों को एकत्र किया। अपने इस काम की वजह से देखते ही देखते वह गुजरात के प्रभावशाली नेताओं की श्रेणी में शामिल हो गए। जन कल्याण और आजादी के लिए चलाए जाने वाले आंदोलनों में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका के चलते उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महत्त्वपूर्ण स्थान मिल गया। गुजरात के बारदोली ताल्लुका के लोगों ने उन्हें 'सरदार' नाम दिया और इस तरह वह सरदार वल्लभ भाई पटेल कहलाने लगे। सरदार पटेल और जवाहरलाल नेहरू–भारतीय

स्वतंत्रता संग्राम में वह कई बार जेल के अंदर बाहर हुए। हालाँकि जिस चीज के लिए इतिहासकार हमेशा सरदार वल्लभ भाई पटेल के बारे में जानने के लिए इच्छुक रहते थे वह थी उनकी और जवाहरलाल नेहरू की प्रतिस्पर्द्धा, सब जानते हैं १९२६ के लाहौर अधिवेशन में सरदार पटेल की हठध र्मिता की वजह से गाँधी जी ने उनसे उनका नाम वापस दिलवा दिया। १९४५–४६ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए भी पटेल एक प्रमुख उम्मीदवार थे। लेकिन गाँधी जी के नेहरू प्रेम ने उन्हें अध्यक्ष नहीं बनने दिया। कई इतिहासकार यहाँ तक मानते हैं कि यदि सरदार पटेल को प्रध ानमंत्री बनने दिया होता तो चीन और पाकिस्तान के युद्ध में भारत को पूर्ण विजय मिलती परंतु गाँध ी के जगजाहिर नेहरू प्रेम ने उन्हें प्रधानमंत्री बनने से रोक दिया।

आजादी के बाद भी लौह पुरुष की भूमिका–भारत आजाद तो हो गया था पर उसे यह आजादी पाकिस्तान की कीमत पर मिली थी और उसके सामने चुनौती थी अपनी छोटी–छोटी रियासतों को एक करने की वरना एक बड़े भारतवर्ष का सपना शायद चकनाचूर हो सकता था। ऐसे में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने रियासतों के प्रति नीति को स्पष्ट करते हुए कहा कि 'रियासतों को तीन विषयों–सुरक्षा, विदेश तथा संचार व्यवस्था के आधार पर भारतीय संघ में शामिल किया जाएगा।' सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही पीवी मेनन के साथ मिलकर कई शेष पृष्ठ 11 पर

विश्व शांति का केवल एक ही मार्ग वैदिक धर्म

✍ खुशहाल चन्द आर्य

जैसे सत्य एक ही होता है, असत्य अनेकों हो सकते हैं। दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा केवल एक ही हो सकती है, टेडी–मेडी अनेकों हो सकती हैं। टेडी–मेडी अनेकों हो सकती हैं। वैसे ही धर्म भी एक ही हो सकता है बाकी मत, पंथ, सम्प्रदाय अनेकों हो सकते हैं। धर्म वह होता है जो केवल मानव–मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी–मात्र की भलाई व कल्याण चाहने वाला हो। अत्याचार न करता हो। सब प्राणियों का पिता केवल एक ईश्वर ही है, इसलिए जितने भी प्राणी हैं, वे सभी ईश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ है। पिता अपने सभी पुत्र व पुत्रियों को एक समान ही पर करता है, इसलिए जो धर्म ईश्वर–प्रदत्त होगा, वही धर्म सभी प्राणियों का हितकारी व कल्याणकारी होगा। यानि वेदों के अनुसार चलने वाला धर्म ही पूर्ण मानव –मात्र का धर्म हो सकता है। बाकी जितने भी धर्म के नाम से प्रचलित मत, पंथ सम्प्रदाय हैं वे सब किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए है। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है। वह चाहे कितना भी महान क्यों न हो, उसके अल्पज्ञ होने के नाते कुछ न कुछ कमी व स्वार्थ जरूर–जरूर हरहेगा। वह अपने ही मत वालों को अधिक पसन्द करेगा। यही भेद–भाव

लड़ाई–झगड़े की जड़ है और एक–दूसरे को अलग–थलग करती है और दुःख का कारण है। विश्व में जितने भी मत व पंथ हैं वे सभी किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए हैं। जैसे ईसाई मत ईशा ने चलाया था। मुस्लिम मत मोहम्मद साहब ने चलाया था। पारसी मत मूसा ने चलाया था। सिख मत गुरू नानक ने चलाया था। जैन मत महावीर स्वामी ने चलाया था और बौद्ध मत महात्मा बुद्ध ने चलाया था। इन मतों से विश्व का कलयाण कभी नहीं हो सकता इसलिए इन मतों को मानने से विश्व में सुख व शांति कभी भी स्थापित नहीं हो सकती। अब प्रश्न उठता है कि वैदिक धर्म से ही विश्व में सुख व शांति कैस स्थापित हो सकती है? इसके निम्नलिखित मुख्य कारण है।

१. वैदिक धर्म सृष्टि के आदि में ईश्वर–प्रदत्त धर्म है:– मनुष्य से स्वाभविक ज्ञान कम और नैमित्तिक ज्ञान अधिक। पशु–पक्षियों में स्वाभाविक ज्ञान अधिक और नैमित्तिक ज्ञान वह होता जो जीवन चलाने के लिए आवश्यक होता है, जैसे खाना–पीता, सोना–जागना, उठना–बैठना, रोना–हंसना तथा सन्तान पैदा करना आदि। इन कामों का फल नहीं मिलता कारण ये हर जीव के लिए करने जरूरी हैं। दूसरा ज्ञान है नैमित्तिक ज्ञान, यह सीखने से सीखा जाता है। यह ज्ञान मनुष्य से अधिक है, इसलिए मनुष्य सिखाने से सीखता है। बिना सिखाए वह मूर्ख ही बना रहता है। इसीलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ से चार वेद दिए जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अर्थवेद हैं। यह चारों वेद चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किये जिनके नाम अग्नि, वायु आदित्य व अंगीरा थे। उनके हृदय में ईख्वर ने चारों वेदों का प्रकाश क्रमशः किया और उन्होंने लोगों को सुनाया। वैसे तो चारों वेदों का सन्देश चारों ऋषियों के मुख से सभी उपस्थित स्त्री व पुरुषों ने सुना पर ब्रम्हा ऋषि ने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उसने अपने शिष्यों को तथा अन्य लोगों को सुनाया। और उन लोगों ने अपने पुत्रों व पौत्रों को सुनाया। इस प्रकार यह सुनाना और सुनना ही परम्परा चालू हो गई। जब तक कागज, स्याही, दवात, कलम का अविष्कार नहीं हुआ और वेद पुस्तकों में लिखा नहीं गया, तब तक यह परम्परा चलती रही। पुस्तकों में लिखे जाने के बाद यह परम्परा प्रायः समाप्त हो गई, पर दक्षिण में अभी तक तक भी चलती अ रही है। इसलिए वेदों को श्रुति भी कहते है जिसका तात्पर्य है सुन–सुनकर सीखना। ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए यही ज्ञान दिया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। जिन कामों को करने से मनुष्य, धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार यानि वेदानुसार करने से इनके फल मोक्ष को प्राप्त कर सकता है जो मानव मात्र का अंतिम लक्ष्य है जिसके पाने के लिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि वैदिक धर्म ही एक ऐसा सच्चा धर्म है जिसके अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन में स्वयं भी सुखी व प्रसन्न रह सकता है और दूसरों को भी सुखी व प्रसनन रख सकता है। इसलिए इसी धर्म को संसार में सुख व शांति स्थापित करने का आधार मानते हैं।

२. वैदिक धर्म ही प्राणी मात्र से प्रेम रखने की बात कहता है और परस्पर प्रेम से रहने की बात सिखाता है किसी से भी भेद–भाव रखने ही नहीं सिखाता कारण वैदिक धर्म मानव मात्र का धर्म है। किसी एक जाति, देश या वर्ग का नहीं है। ईश्वर सबका पिता है और यह धर्म इस पिता के द्वारा ही चलाया हुआ है। हम सब उस परम पिता परमात्मा के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। पिता अपनी सन्तान का भला व कलयाण करना चाहता हैइसलिऐ ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही वेदों में इतिहास भी नहीं है कारण यह आदि ग्रन्थ है। इतिहास बाद में लिखा जाता है।

३. वेदों में न कोई कुछ घटा सकता है और न कोई कुछ बढ़ा सकता है कारण यह पूर्ण ज्ञान है और पूर्ण ज्ञानवान ईश्वर द्वारा प्रदत्त है। बाकी हमारे धार्मिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति आदि में ब्राम्हणों ने अपने स्थार्व के लिए काफी मिलावट कर दी है परन्तु वेदों में ये स्वार्थी ब्राम्हण कोई मिलावट नहीं कर पा रहे है। कारण इनके सस्वर बोलने में चढ़ाव–उतराव इस किस्म से है जिसके बोलने से मिलावट पकड़ी जाती है इससे वे मिलावट नहीं कर पाते इसलिए वह ईश्वरीय ज्ञान आज भी हमारे पास ज्यों का त्यों है। इस अद्वितीयता से यह सिद्ध भी होता है कि यह वेद ज्ञान ईश्वर का है।

४. मानव मात्र का धर्म वही हो सकता है जो सृष्टि के आरम्भ से चला हो। बाद में चला हुआ धर्म, मानव–मात्र का नहीं हो सकता कारण उस धर्म के चलने से पहले भी कोई धर्म माना जाता होगा। बाद में किसी व्यक्ति द्वारा चलाया हुआ धर्म, धर्म न होकर कोई मत, पंच व सम्प्रदाय ही है जो कोई वर्ग विशेष द्वारा माना जाता है। इसलिए वैदिक धर्म जो सृष्टि के आरम्भ से चला हुआ है वही मानव मात्र का धर्म है, अन्य नहीं।

५. वेद किसी देशीय भाषा में नहीं हैं। वेद संस्कृत भाषा में हैं जो सब भाषाओं की जननी है और सृष्टि के आरम्भ की भाषा है। अन्य धर्म ग्रन्थ किसी देशीय भाषा में हैं

शेष पृष्ठ 11 पर

जिला बुलन्दशहर से हिन्दू सभा वार्ता का शुल्क मास अगस्त २०१८

1.	सुभाष उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ग्राम–सतवरा, डाक० दानपुर–202392 जिला–बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
2.	बार एसोसिएशन, कलक्ट्रेट, सन्त रविदासनगर–221401 (उ० प्र०) (आजीवन)	1200/-
3.	बार एसोसिएशन, कलक्ट्रेट, श्रवास्ती–281805 (उ०प्र०) (आजीवन)	1200/-
4.	कलक्ट्रेट बार एसोसिएशन, कलक्ट्रेट, कानपुर देहात– 209101 (उ० प्र०) (आजीवन)	1200/-
5.	वैदिक वानप्रस्थ आश्रम, निकट पं० गोविन्द वल्लभ पन्त हाई स्कूल, बुद्धि विहार, फेस–दिल्ली रोड़, मुरादाबाद–244001 (वार्षिक)	150/-
6.	प्रांशु जोशी, मिलन विहार, मीर पुर, रूपा वाली गली, मुरादाबाद–244001 (वार्षिक)	150/-
7.	संजीव रुहेला द्वारा ओइम् प्रकाश आर्य, 481, एल० आई० जी० आवास विकास कॉलोनी–प्रथम बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
8.	नरेश पब्लिक स्कूल, अराजियात, तेलीवाड़ा बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
9.	दीपक गोयल पुत्र सतीश चन्द गोयल, पूर्व अध्यापक, 771/15, आदर्श नगर, बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
10.	हितेष कुमार गर्ग, पुत्र कैलाश चन्द गर्ग 7, सराय राम सुख तेलीवाड़ा, बुलन्दशहर (द्विवर्षीय शुल्क 2018-19, 2019-20)	300/-
11.	कैलाश मानसरोवर, मुक्ति आन्दोलन, सुनहरी कुटीर, जी–12, यमुनापुरम–द्वितीय, बुलन्दशहर (उ०प्र०) (द्विवर्षीय शुल्क 2018-19, 2019-20)	300/-
	टोटल	5100/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

जरा फिर सोचिए और स्वयं इन प्रश्नों के उत्तर खोजिए...

1. विश्व में लगभग 52 मुस्लिम देश है, एक मुस्लिम देश का नाम बतायें जो हज के लिए सब्सिडी देता हो?
2. एक मुस्लिम देश बताईये जहाँ हिन्दुओं के लिए विशेष कानून है। जैसे कि भारत मे मुसलमानों के लिए है?
3. किसी एक देश का नाम बताईये, जहाँ 85% बहुसंख्यकों को "याचना" करनी पड़ती है, 15% अल्पसख्यकों को संतुष्ट करने के लिए?
4. एक मुस्लिम देश का नाम बताइये, जहाँ का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री गैर–मुस्लिम है?
5. किसी 'मुल्ला' या "मौलवी" का नाम बताइये, जिसने आतंकवादियों के खिलाफ फतवा जारी किया हो?
6. महाराष्ट्र, बिहार, केरल जैसे हिन्दू बहुल राज्यों में मुस्लिम मुख्यमंत्री हो चुके हैं, क्या आप कल्पना कर सकते है कि मुस्लिम बहुत राज्य "कश्मीर" में कोई हिन्दू मुख्यमंत्री हो सकता है?
7. 1947 में आजादी के दौरान पाकिस्तान में हिन्दू जनसंख्या 24% थी अब वह घटकर 1.7 प्रतिशत रह गई है, उस समय तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब आज का अहसान फरामोश बांग्लादेश) में हिन्दू जनसंख्या 30% थी जो अब 7% से भी कम हो गई है। क्या हुआ गुमशुदा हिन्दुओं का? क्या वहाँ (और यहाँ भी) हिन्दुओं के कोई मानवाधिकार है?
8. इस दौरान भारत में मुस्लिम जनसंख्या कट्टरवादी है?
9. यदि हिन्दू असहिष्णु हैं तो कैसे हमारे यहाँ मुस्लिम सड़कों पर नमाज पढ़ते रहते हैं? लाउडस्पीकर पर दिन भर चिल्लाते रहते हैं कि "अल्लाह के सिवाय" और कोई शक्ति नहीं है"?
10. सोमनाथ मन्दिर के जोर्णोद्धार के लिए देश के पैसे का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए ऐसा गाँधीजी ने कहा था, लेकिन 1948 में ही दिल्ली की मस्जिदों को सरकारी मदद से बनवाने के लिए उन्होंने नेहरू और पटेल पर दबाव बनाया, क्यों?
11. कश्मीर, नागालैण्ड अरूणाचल प्रदेश, मेघालय आदि में हिन्दू अल्पसंख्यक है, क्या उन्हें विशेष सुविधा मिलती है?
12. हज करने के लिए सब्सिडी मिलती है जबकि मानसरोवर और अमरनाथ जाने पर टैक्स देना पड़ता है, क्यों?
13. मदरसे और क्रिश्चियन स्कूल अपने–अपने स्कूलों में बाईबल और कुरान पढ़ा सकते हैं तो फिर सरस्वती शिशु मन्दिर में और बाकी स्कूलों में गीता और रामायण क्यों नही पढ़ाई जा सकती?
14. गोधरा के बाद मीडिया मे जो हंगामा बरपा, वैसा हंगामा कश्मीर के चार लाख हिन्दुओं की मौत और पलायन पर क्यों नहीं होता?

शेष पृष्ठ 7 का **श्रीराम जन्मभूमि वास्तविक.......**

रामलला विराजमान की है। यह भगवान की जन्मभूमि, लीलाभूमि व क्रीड़ाभूमि है। जन्मभूमि को प्राप्त करने का संघर्ष ई. सन् १५२८ से निरन्तर जारी है। इस संघर्ष को अयोध्या का संत–समाज और आस–पास के राजा–महाराजा लड़ रहे थे। ७६ संघर्षों का वर्णन इतिहास के पन्नों में मिलता है। ये संघर्ष बताते हैं कि हिन्दुओं ने इस स्थान से अपना दावा कभी नहीं छोड़ा। भगवान की जन्मभूमि होने के कारण वह स्थान हिन्दू समाज के लिए पूज्य, पवित्र तथा स्वयं में एक देवता है। मन्दिर तोड़ दिये जाने के बावजूद भक्त–जन उस स्थान की परिक्रमा करके उसे साष्टांग प्रणाम करते थे। परिक्रमा का अर्थ ही है कि वह स्थान पूज्य और देवता है। परिक्रमा केवल हिन्दू मन्दिरों में ही होती है।

हिन्दू समाज में मन्दिर की सम्पूर्ण सम्पत्ति भगवान की होती है, किसी व्यक्ति, ट्रस्ट या महन्त की नहीं। महन्त, व्यक्ति, साधु, पुजारी, ट्रस्टी भगवान के सेवक होते हैं; स्वामी कदापि नहीं। हिन्दू समाज में देवता एक जीवन्त इकाई है। वह अपना मुकदमा लड़ सकता है तथा सम्पत्ति का स्वामी होता है। श्रीराम जन्मभूमि सम्पत्ति न होकर स्वयं में देवता है। उसके साथ सामान्य सम्पत्ति का विवाद नहीं हो सकता। बाबर कोई पैगम्बर या महापुरुष नहीं था, वह केवल विदेशी आक्रांता था। विदेशी आक्रमणकारी से लगाव देशभक्ति नहीं है। युद्ध में जीतने के कारण ही बाबर जमीन का मालिक नहीं बन सकता। वह केवल भूमि का लगान इकट्ठा करने का अधिकारी हो सकता था। वहाँ पर अजान के लिए कोई मीनार नहीं था। बजू (हाथ–पैरे धोने का स्थान) की कोई व्यवस्था नहीं थी। तब वह ढाँचा मस्जिद का था ही नहीं। कारसेवक अनुशासन–हीन नहीं थे। उन्होंने सन्तों द्वारा घोषित दिनांक व समय का पूरा पालन किया। मुसलमानों ने अदालत में कहा कि मन्दिर के घण्टे की आवाज शैतान की आवाज है। नमाज तो शान्ति व मौन भाव से की जाती है जबकि भगवान की आरती घण्टे–घड़ियाल, नगाड़े के साथ धूमधाम से होती है। दोनों में सामंजस्य बैठ ही नहीं सकता। भारत के कोने–कोने में नमाज के समय नेताओं के भाषणों का माइक बन्द करना पड़ता है, बारात का बाजा बन्द करना पड़ता है, जुलूस के ढोल बन्द करने पड़ते हैं। अन्यथा दंगे होते हैं। अयोध्या में मन्दिर–मस्जिद पास–पास में बनी तो अगली पीढ़ी की शान्ति भी छिन जाएगी और आपसी झगड़ों का बीजारोपण होगा। अयोध्या में आज भी एक दर्जन से अधिक ऐसी मस्जिदें हैं, जहाँ कोई नमाज पढ़ने नहीं जाता। वे ६ दिसम्बर, १९९२ को भी थीं। सब पुरानी हैं कोई नई नहीं है। ६ दिसम्बर के बाद तक लाखों उत्साही नौजवान रामभक्त अयोध्या में उपस्थित रहे; किन्तु उन्होंने किसी मस्जिद को छुआ तक नहीं, किसी मुसलमान के घर को नुकसान नहीं पहुँचाया, अयोध्या में मुस्लिम व्यापारी भी हैं, मुस्लिम आबादी है किन्तु सब सुरक्षित रहे। मन्दिर के निर्धारित प्रारूप के लिए ३ लाख गाँवों के ६ करोड़ हिन्दुओं द्वारा पूजन करके रामशिलाएँ अयोध्या भेजी गई थीं। वे शिलाएँ सुरक्षित हैं। गर्भगृह वहीं बनेगा, जहाँ रामलला विराजमान हैं तथा मंदिर उन्हीं सन्तों के कर–कमलों से बनेगा; जिन्होंने १९८४ से आज तक इस आन्दोलन का लगातार नेतृत्व व मार्गदर्शन किया है। हिन्दुओं के लिए अयोध्या का उतना ही महत्त्व है, जितना मुस्लिमों के लिए मक्का का है।

हिन्दू धर्म श्रेष्ठत्तम क्यों है?

हमारा धर्म हिन्दू सबसे प्राचीन धर्म है। हमारा धर्म श्रेष्ठतम् क्यों है इसके कुछ तथ्य हैं

1. हमारा धर्म ब्रम्हचर्य पर बल देता है जबकि अन्य किसी धर्म में ऐसा नहीं है।
2. भारत उत्थान का कार्य जितना हिन्दू धर्म में होता है उतना किसी अन्य में नहीं।
3. धर्म की रक्षा हेतु प्राणों की आहुति देने के जितने उदाहरण हिन्दू धर्म में देखने को मिलते हैं उतने अन्य किसी धर्म में नहीं उदाहरण पृथ्वीराज चौहान, छत्रपति शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह, रानी लक्ष्मीबाई आदि अनेकों उदाहरण हैं।
4. भाई–बहिन चाहे वो किसी भी रिश्ते के हों भाई–बहन ही रहते हैं।
5. दयावान होते हैं हिन्दू समाज के व्यक्ति। वह पशुओं पर भी दया को महत्व देता है।
6. जितने महापुरूष हिन्दू समाज में हुए जितने तपस्वी, ऋषि, महर्षि हुए सभी आध्यात्मिकता से जुड़े व अपने अनुभव का ज्ञान दिया।
7. हिन्दू धर्म राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का बोध कराता है।
8. अनेक उदाहरण हैं जो यह दर्शाते हैं कि वास्तविकता में हिन्दू धर्म श्रेष्ठतम् धर्म हैं हमें गर्व होना चाहिए कि हम हिन्दू हैं हमारा जन्म हिन्दू परिवार में हुआ है।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 8 का
लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल.....

देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिए कार्य आरम्भ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हें स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणाम स्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी रजवाड़ों ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। १५ अगस्त १९४७ तक हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ को छोड़कर शेष भारतीय रियासतें 'भारत संघ' में सम्मिलित हो गई। जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जब बहुत विरोध हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। गृहमंत्री बनने के बाद भारतीय रियासतों के विलय की जिम्मेदारी उन्हें ही सौंपी गई। उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए छह सौ छोटी–बड़ी रियासतों का भारत में विलय कराया। माना जाता है कि पटेल कश्मीर को भी बिना शर्त भारत से जोड़ना चाहते थे पर नेहरू जी ने हस्तक्षेप कर कश्मीर को विशेष दर्जा दे दिया। नेहरू जी ने कश्मीर के मुद्दे को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या है। अगर कश्मीर का निर्णय नेहरू की बजाय पटेल के हाथ में होता तो कश्मीर आज भारत के लिए समस्या नहीं बल्कि गौरव का विषय होता। सरदार पटेल का निधन १५ दिसंबर, १९५० को मुंबई में हुआ था। आज हमारा समाज ऐसे ही लौह पुरुष की तलाश में है जो समाज में किसी भी कीमत पर एकता लाने में सफल हो। **साभार सत्यचक्र**

शेष पृष्ठ 1 का
एएमयू बनी आतंक का........

विश्वविद्यालय देश विरोधी कृत्यों में संलिप्त होता चला जा रहा है। अभी हाल ही में एक और खबर मिली है कि वहां के छात्रों ने विश्वविद्यालय द्वारा कुछ कश्मीरी छात्रों को नोटिस देने के विरोध में एक प्रदर्शन किया है। हालांकि विश्वविद्यालय प्रशासन ने इसे महज अफवाह करार दिया है, लेकिन सूत्रों के अनुसार मुस्लिम छात्रों ने कश्मीरी विवादित छात्रों ने प्रशासन पर काफी दबाव बनाया हुआ है। अखिल भारत हिन्दू महासभा ने सरकार से मांग कि है कि सरकार इस मामले में सख्त कार्रवाई करते हुए तत्काल आतंक का पक्ष लेने वाले प्रशासन कर्मियों तथा छात्रों को विश्वविद्यालय परिसर से बाहर का रास्ता दिखाए। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एएमयू में आतंक फैला रहे सभी देशद्रोहियों व आतंकियों पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये

द्विवार्षिक...300/- रुपये

आजीवन सदस्य...1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री। आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 9 का
विश्व शांति का केवल........

इसलिए वह मानव मात्र का धर्म नहीं हो सकता।

६. वेद, प्रकृति के अनुसार है। वेदों में प्रकृति के विरूद्ध कोई बात नहीं है। जैसे एक व्यक्ति इतना योगी, तपस्वी व पहुंचा हुआ सन्यासी है जो एक समय में ही मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास व दिल्ली दिखाई देता है। यह बात प्रकृति विरूद्ध है। एक व्यक्ति एक समय में एक ही जगह दिखाई देगा। मनुष्यों द्वारा चलाए गये मत व पंथों में अपना चमत्कार दिखाने के लिए प्रकृति विरुद्ध बातें बतलाते हैं। जैसे ईसाई लोग कहते हैं कि ईशा की शरण में आ जाओ तुम्हारे सब पाप धुल जायेंगे और मोक्ष के अधिकारी बन जायेंगे। मुस्लिम भाई कहते हैं कि मोहम्मद साहब ने चिटली ऊँगली से चाँद के दो टुकड़े कर दिये। पौराणिक भाई इस मामले में सबसे आगे हैं। वे तो कहते हैं कि हनुमान जी ने बचपन में सूर्य को मुख में रख लिया, कुन्ती को कर्ण कान से हुआ था। भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को चिटली ऊँगली से उठा लिया। यह सब काम प्रकृति विरूद्ध है इसलिए यह सब असम्भव है। इसलिए यह सब अन्धविश्वास है। वैदिक धर्म इन सब बातों को नहीं मानता। जो बातें बुद्धि, तर्क व विज्ञान सम्मत् हैं वैदिक धर्म इन सब बातों को नहीं मानता। जो बाते बुद्धि, तर्क व विज्ञान सम्वत् हैं वैदिक धर्म उसी बात को मानता है। अतः संसार के प्रत्येक प्राणी को वैदिक धर्म को मानना चाहिए।

शेष पृष्ठ 4 का
नारियल एक गुण........

के बाद दो–तीन मिनट तक हल्की आँच पर सिकाई करते हुए नाखून की गोलाई में मालिश करें, फिर गुनगुने पानी से हाथ–पैर धो लें। इसके फूल को सफेद चंदन के साथ पीसकर शक्कर मिलाकर शर्बत बना लें और इसका सुबह–शाम सेवन करें, श्वेत प्रदर में आराम मिलता है। इसके तेल में थोड़ा–सा भीमसेनी कपूर मिलाकर योनि भाग में लगाएँ। इससे योनि कंडू (जननांग में खुजली) का निवारण होता है। कच्चे नारियल के पानी से सिर के बाल धोएँ, बाल खूब तेजी से बढ़ने शुरू हो जाते हैं। इसके तेल में थोड़ा कपूर व एक नींबू का रस मिलाकर, उससे बालों की मालिश करें, रात भर लगा रहने दें और सुबह सिर धो लें। इससे रूसी दूर होती है। पेशाब कम आने की स्थिति में नारियल का पानी विशेष सहायक है। इसकी गिरी खाने से घुटनों का दर्द खत्म हो जाता है। त्वचा को आकर्षक और आभामय बनाने के लिए प्रतिदिन या तीसरे दिन नारियल व जैतून के तेल की मालिश करें। गौनेरिया व सिफलिस में करज की जड़ का स्वरस, नारियल का दूध व चूने का पानी मिलाकर प्रयोग किया जाता है। नारियल के तेल में थोड़ा–सा नींबू का रस मिलाकर, पीने से उल्टियाँ आना बंद हो जाती हैं। यदि हाथ में मिट्टी के तेल की बदबू समा गई हो, तो नारियल का तेल हाथ पर मल लेना चाहिए, बदबू दूर हो जाएगी। मिश्री व नारियल की गिरी खाने से हिचकी बंद हो जाती है। मुँह में छाले हो गए हों तो कच्चे नारियल की गिरी दिन में कई बार खाने से राहत मिलेगी। पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर इस फल को औषधीय या सौंदर्य प्रसाधन के रूप में अपनाकर, इसके गुणों का सही–सही लाभ उठाएँ।

शेष पृष्ठ 5 का
सौमनस्य का सौभाग्य......

के समय दीवार पर काजल, रोली, मेंहदी की गणगौर की तरह बिंदी भी लगाई जाती है। करवा चौथ व्रत पर्व की पूजा घर परिवार, आस–पड़ोस, मित्र परिचित महिलायें मिलकर सामूहिक रूप से करती हैं। पूजा में करवे दो भरे जाते है। ननद, भावज, देवरानी, जिठानी आस–पड़ोस के साथ आँचल से ढंककर कसए बदले जाते हैं। कहीं चार पाँच बार और कहीं सात बार बदलते हर बार कहा जाता है–

बींझा बेटी कसआ ले
सात भाइयों की मैन कसआ ले
पीहर पूरी कसआ ले
अधवर खानी कसआ ले
सदा सुहागिन कसआ ले

अकेली स्त्री यदि हो तो गौर के नाम से कसए के साथ करवा बदल लेती है और जल के लोटे को कहानी सुना देती है। करवा चौथ का अर्ध्य भरसक उगते चन्द्रमा को दिया जाता है, ''बूढ़े चन्द्रमा को नहीं। कुछ स्थानों पर चार पाँच बार कुछ में सात बार घूम–घूम कर रखे काले तिल और जौ डालते हुए यह कहकर अर्ध्य देते हैं–

''तिलकारे, जौ बारे, बारे चंदा अरथ लै''

कुछ स्थानों पर कहते हैं–

''चार घड़ी को चन्द्रमा, चौघड़िया की रात
बारे चंदा अरघ लै, करवा चौथ की रात
कहीं कहीं अरघ कसए से नहीं लोटे से दिया जाता है।

पंजाब में अर्ध्य देते समय कहते हैं–

सिर चढ़ी, पैर खड़ी, चन्द्रमा को अरघ देतीं, सब सुहागिनें खड़ी।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

श्रेष्ठ अभियान्त्रिकी विज्ञान का निदर्शन है श्रीराम सेतु

श्रीरामचरित मानस के इस प्रसंग से जन–जन परिचित है, जब श्रीराम ने श्रीराम सेतु के निर्माण के पूर्व अपना धनुष उठा लिया था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने उस प्रसंग का वर्णन इन पंक्तियों में किया है:–

'विनय न मानत जलधि जड़, गये तीनि दिन बीत।
बोले राम सकोप तब, भय बिन होइ न प्रीति।।'

'नासा' द्वारा लिये गये चित्रों में श्रीरामेश्वरम् और श्रीलंका के बीच मानव निर्मित सेतु के अस्तित्व की पुष्टि होती है। सन् १६०३ में प्रकाशित 'ग्लोसरी आफ मद्रास प्रेसीडेंसी (सी.डी मैक्लियोगन द्वारा सम्पादित) के अनुसार इसे एडम्सब्रिज भी कहा जाता है। इसमें प्राप्त विवरण के अनुसार यह सेतु सन् १४८० तक भारतीय प्रायद्वीप को श्रीलंका से जोड़ता था। इस सेतु से लोगों का आवागमन होता था। इस सेतु से लोगों का आवागमन होता था। उस समय आये भूकम्प से यह क्षतिग्रस्त हो गया। श्रीराम सेतु एक कालजयी एवं मानव सभ्यता की प्राचीन धरोहर है। यह हिन्दुओं की अस्मिता और पहचान से जुड़ने के साथ पूजनीय भी है। यह वैश्विक स्तर का स्मारक है। सन १७८८, १८०४ के पश्चिमी नक्शों में श्रीराम सेतु के नाम से उल्लेख मिलता है। तंजौर स्थित आस्ट्रेलिया के वनस्पति शास्त्री यात्री द्वारा बनाया गया जो नक्शा उपलब्ध है, उसमें 'रामारसेतु' लिखा हुआ है। सन् १७८७ के नक्शे में रामन को बिल (श्रीराम का मन्दिर) लिखा हुआ है प्राचीन अभियान्त्रिकी विज्ञान का रेष्ठ उपदाहरण है श्रीराम सेतु बेजोड़ शिल्प कला का यह निदर्शन है। साथ ही रामायणकालीन नैतिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों के अर्जित गुरुतर ज्ञान का संकेतक भी है। इस श्रीराम सेतु से आस्था और इतिहास के मिलन की व्यापक समीावनाएँ हैं, भारतीयता को समर्पित मनीषियों ने श्रीरामसतु से लेकर सरस्वती नदी शोध अभियान के प्रयास शुरू किये हैं, जिससे पश्चिम के विद्वानों द्वारा विज्ञान और इतिहास की सीमाएँ अपने आप ध्वस्त हो रही हैं। यह स्पष्ट है कि भारतीय कालगणना का विशाल सागर पश्चिम के संकीर्ण घेरे में समा नहीं सकता। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा जो अवधारणाएँ गलत होने के बावजूद थोपी गयी हैं, उनकी कड़ियाँ स्वतः टूट जायेंगी। अब समय आ गया है, जब सरस्वती से लेकर श्रीराम सेतु तक का पाश्चात्य इतिहासकारों का भारत के इतिहास और भूगोल के बारे में जो भ्रम था, टूटता नजर आ रहा है। अब आम लोगों को बतलाने की आवश्यकता है कि अंग्रेजों द्वारा जो ऐतिहासिक चित्र भारत के बारे में खींचे गये थे, वे विकृत हैं। अमेरिका के एक साइन्स चैनल ने दावा किया है कि श्रीराम सेतु कोरी कल्पना नहीं है। इसके प्रमाण हैं कि भारत और श्रीलंका के बीच स्थित बलुई रेखा पर विद्यमान पत्थर करीब सात हजार साल पुराने हैं। इससे इस मान्यता को बल मिलता है कि भगवान् श्रीराम और उनकी वानर सेना ने श्रीलंका में प्रवेश करने के लिए इस सेतु का निर्माण किया था। इस चैनल ने अपने शोध–अध्ययन के आधार पर दावा किया है कि यह ढाँचा प्राकृतिक नहीं अपितु मानव निर्मित है। इस क्षेत्र में समुद्र बेहद उथला है समुद्र में इन चट्टानों की गहराई ३ फुट से लेकर ३० फुट के बीच है। पाश्चात्य विद्वानों एवं कम्युनिष्टों ने तर्क और तथ्य से विहीन रहकर इतिहास लेखन किया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को तोड़–मरोड़ कर पेश करने की घृणित चेष्टाएँ की हैं। उन्हें भारतीय संस्कृति और उसकी गौरव गाथाओं से कोई सरोकार नहीं है। इन इतिहासकारों ने इस बात का उल्लेख करने का साहस नहीं बटोरा कि इस देश को किसने लूटा? आज लुप्त कड़ियाँ परत–दर–परत खुलती चली जा रही है। अब विश्वभर के वैज्ञानिक एवं पुरातत्ववेता इस तथ्य से सहमत हैं कि श्रीराम सेतु मानव निर्मित है। वह रामायणकालीन है। साथ ही भारतीय मान्यता के अनुसार वह नल–नील की श्रेष्ठ अभियान्त्रिकी विज्ञान का श्रेष्ठ नमूना भी है। अभी हाल ही में अमेरिकी पुरातत्व वेत्ताओं ने विज्ञान चैनल डिस्कवरी में दिखलाये एक प्रदर्शन में एक ऐसा शोध भी प्रस्तुत किया है। इस कार्यक्रम में अन्तरिक्ष से दिखायी देने वाली एक तस्वीर भी प्रदर्शित है। उल्लेखनीय है कि सोनिया कांग्रेस के नेतृत्व वाली डॉ. मनमोहन सिंह सरकार के समय सेतु समुद्रम परियोजना के चलते श्रीरामसेतु और भगवान् श्रीराम को मिथक कहते हुए सर्वोच्च न्यायालय में एक शपथ पत्र भी पेश किया गया था। शपथ पत्र में श्रीराम की कथा पर सन्देह किया गया था। इसी दौरान इस सेतु को तोड़ने का उपक्रम भी चलाया गया था जबकि इस प्रकार की धरोहरों को संरक्षित रखने की जरूरत है। इस सेतु का उल्लेख वाल्मीकि रामायण सहित स्कन्द पुराण, अग्नि पुराण आदि में मिलता है।

डॉ. किशन कछवाहा

कबिरा खड़ा बजार में

हम तुम्हें चाहते हैं मतलब से

सत्तर के दशक से शुरू हुई गठबंधन की राजनीति कब–कब ऊपर–नीचे होती रही है, इसका आंकलन हमेशा से ही देश की जनता जानती रही है, लेकिन गठबंधन के पीछे के कारणों, उद्देश्यों के पीछे की राजनीति हमेशा से ही राष्ट्रहित व राज्यहित में कम, स्वहित अथवा पार्टी हित में अधिक रही है। कितनी सरकारें गठबंधन की भेंट चढ़ गईं, कितनी पार्टियों का अस्तित्व खत्म हो गया, कितनी पार्टियां मालामाल हों गईं और कितने नेता पर्दा से बेपर्दा हों गए लेकिन गठबंधन आज भी बनने से पहले बहुत मजबूत रहता है। हालांकि बनने के बाद इसकी आयु कितनी रहती है, इसका आंकलन करना थोड़ा मुश्किल है। मेरी समझ में आज तक यह नहीं आया कि गठबंधन से पूर्व दलों के नेता एक–दूसरे को कोसने में कोई–कोई कसर नहीं छोड़ते और एक–दूसरे का चारित्रिक और राजनैतिक हनन करने की हर सीमाएं लांघ जाते हैं, लेकिन गठबंधन के दौरान सबकी विचारधारा एक सी कैसी हो जाती है? वह कौन सी दवाई होती है तो समस्याओं के सारे मर्ज को एक साथ खत्म कर देता है। कमोवेश वर्तमान परिवेश में भी देश में गठबंधन का रोग बुरी तरह फैल रहा है। कभी बुआ–बबुआ का एक –दूसरे को ताना मारने वाले अब इस कदर सगे हो गए हैं कि सगे रिश्ते भी खुद को अनाथ महसूस करने लगे है। कुछ दिन पूर्व राहुल–अखिलेश, लालू–नीतिश भी भाई–भाई बनकर जनता को बेवकूफ बनाने निकले थे। लेकिन अब सौतेले भाई बनकर दिख रहे है। आगे फिर कब इनका रिश्ता चिल्लाने लगे यह कहा नहीं जा सकता। शिवसेना के उद्धव ठाकरे को कभी नरेन्द्र मोदी में राम दिखते थे अब विभीषण दिखने लगे है। उत्तर–प्रदेश के कभी दो युवकों ने यह नारा दिया था कि लोगों को "हमारा साथ पसंद है", लेकिन उन दिनों को स्वयं एक–दूसरे का साथ पसंद नहीं आ रहा है। ऊपर से अपने घर वाले भी साथ नहीं दे रहे हैं। रात दिनों कर्नाटक में चुनाव के बाद मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में पूरा विपक्ष जिस प्रकार से एक परिवार के रूप में स्वयं को दर्शा रहा था, उससे लगता था कि इनके अन्दर "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना कूट–कूट का भर गई है, लेकिन अचानक मालिकाना हक जताते हुए कांग्रेसी युवराज ने स्वयं को परिवार का मुखिया घोषित कर दिया। फिर परिवार विखंडित हो गया और अब आगे क्या–क्या होगा। इस पर नजर जनता की होगी। स्पष्ट है कि गटबंधन देशहित के लिए न होकर सत्ता के लिए राजनीतिक शतरंज की एक चाल भर है, जो नेताओं के लिए स्वहित का साधन है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 24 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।